चमत्कारचिन्तामणि

जातकग्रन्थ

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन
बम्बई

॥ श्रीः ॥

भट्टनारायणविरचितः

चमत्कारचिन्तामणिः ।

(जातकग्रन्थः)

पं० महीधरशर्मकृतभाषाटीकासमेतः ।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,™

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

संस्करण : दिसंबर २०१२, सम्वत् २०६९

मूल्य : ३० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई – ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass,
Prop: Shri Venkateshwar Press,
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi,
Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email .: khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s. Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai - 400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013.

भूमिका.

श्रीगणेशाय नमः । श्रुतिनेत्र ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष चमत्कारी सद्यःप्रत्ययकारीकी महिमा जगद्विख्यातही है परंच वर्तमान समयमें कितने ही मतांतरीय लोग इसे तुच्छ एवं निरर्थक मानने लगे हैं, कारण यह है कि कलिकालमहिमा बढनेसे (देववाणी) संस्कृतभाषाका परिचय इंग्रेजी उदरंभर नवशिक्षितोंमें न्यून हो गया है जितने प्राचीन ग्रंथ ज्ञानविज्ञानादिबोधक हैं समस्त उक्त भाषामेंही हैं यतः मूलविद्याही यह है इसके अपरिचित लोगोंको कालमहिमा शीघ्रही आक्रमण करती है नहीं तो इतनाभी स्मरण सर्व साधारणमें होही जाता कि भारतवर्षके आर्यजनोंके समस्त वर्णाश्रम धर्म जन्मादिसंस्कार भूत भविष्य कर्म फलज्ञान इष्टानिष्ट, हानि, लाभ, सुख, दुःख आदि समस्त कृत्योंमें क्या विना ज्योतिषशास्त्र काम चलता है? यदि नहीं है तब तो केवल नास्तिकताही ठहरी आर्यजनोंके अतिरिक्त मुसलमान इंग्रेज आदि जन भी तौ इसे फलप्रकरणमें जानने मानने लगे हैं हमारा तो मूल शास्त्रही है. संस्कृत वाणीका अल्प प्रचार देख सर्व साधारणको ज्योतिषका चमत्कार विदित करानेके लिये एवं अल्पही परिश्रमसे ज्योतिषका फलादेश जनानेके हेतु भारतवर्षमें विख्यात " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " यंत्रालयाधीश श्रीकृ-

ष्णदासात्मज गंगाविष्णु अनेक ग्रंथोंका भाषांतर कराय प्रचार कर रहे हैं इन्ही महाशयोंकी आज्ञानुसार मैं पं०महीधरशर्मा राजधानी टीहरी जिला गढवालनिवासी चमत्कारचिंतामणि नाम ग्रंथकी भाषाटीका करता हूँ जिसमें समस्त भाव फलमेंही फलादेश सर्व साधारण जान सकते हैं गणित एवं योगसंबंध आदि कठिन विचार कुछ नहीं केवल ग्रहकुंडलीमात्र देखनेसे फलादेश ज्ञात हो जाता है जो मैंने वृहज्जातक नीलकंठी आदिकी भाषाटीका की है उनसे किंचिन्मात्र ज्योतिषका बोध होना आवश्यक है इसमें वहभी नहीं हिंदीभाषा मात्रके ज्ञाता इससे काम ले सकता है और भी पाठकोंके प्रसन्नार्थ युक्ति की गई है कि जो भावफल वैषयिक कुछ कुछ वार्ता विशेष हैं वेभी ग्रंथांतरोंके मत लेकर इसके प्रत्येक श्लोकके टीकामें शामिल लिख दिये हैं जिससे पाठकोंको अन्य ग्रंथकी अपेक्षा न रहे। इति महीधर शर्मा।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

चमत्कारचिन्तामणिः।

भाषाटीकासहितः ॥

गणेशं गुरुं शङ्करं वेङ्कटेशं प्रणम्याथ मुम्बाङ्घ्रिपद्मं हृदब्जे ॥ निधायाधुना बालबोधाय टीकां धरान्तोमही भाषया संतनोति ॥ चमत्कारचिन्तामणेर्भावपंक्तेः स्वबुद्ध्याल्पया टीहरी राजधान्याम् ॥ नगाब्ध्यङ्कभूसंमिते वैक्रमीये मुदा श्रेष्ठिनोऽनुज्ञया साधुवृत्तेः ॥

अर्थ-भाषाकार ग्रंथादिमें विघ्नविघातार्थ मंगलाचरण प्रयोजनसहित प्रकट करता है कि गणेश, स्वगुरु, शिव, वेंकटेश्वरको प्रणाम करके एवं मुंबादेवीके चरणकमल अपने हृदयकमलमें धारण कर इस समयमें बालकोंके बोधके लिये राजधानी टीहरीनिवासी महीधरशर्मा चमत्कारचिंतामणि ग्रह भावफलोंकी भाषाटीका विक्रम संवत् १९४७ में सज्जन प्रशंसनीय यद्वा वणिग्वृत्तिमान् श्रीगङ्गाविष्णुजीकी आज्ञानुसार प्रसन्नतापूर्वक अपनी अल्प बुद्ध्यनुसार प्रगट करता है ॥

अथ रविभावफलानि ।

तनुस्थो रविस्तुङ्गयष्टिं विधत्ते मनः संतपे-
द्दारदायादवर्गात्॥वपुःपीड्यते वातपित्तेन
नित्यं स वै पर्यटन् ह्रासवृद्धिं प्रयाति ॥ १ ॥

अर्थ–प्रथम सूर्यके भावफल कहते हैं कि जिसके जन्ममें सूर्य लग्नका हो तो उसका शरीर एवं नासिकादि अवयव ऊंचे हों स्त्री पुत्र आदियोंसे मन संतप्त (संतापस हित) रहे वायुसंयुक्त पित्तरोग (जैसे गरम व्याधि आदि) से शरीर पीडित रहे तथा देशांतरोंमें फिरा करे अर्थात् एक जगह स्थिति निरंतर न रहे और धन यद्वा ऐश्वर्य कभी घटता कभी बढता रहे एकस्वरूप निरंतर बना न रहे. (प्रकांतरसे फल है कि) रोगी रहे शरीरकी कला पूर्ण न रहे ईर्ष्यावान् एवं गुस्साबाज हो दूसरेकी निंदा योग्य हो प्रतापक रहे ॥ १ ॥

धने यस्य भानुः स भाग्याधिकः स्याच्चतु-
ष्पात्सुखं सद्व्यये स्वं च याति ॥ कुटुम्बे

कलिर्जायया जायतेऽपि क्रिया निष्फला याति लाभस्य हेतोः ॥ २ ॥

अर्थ–जिसका सूर्य लग्नसे दूसरे भावमें हो तो वह मनुष्य भाग्यशाली (अधिकैश्वर्यवान्) होवे, घोडे, हाथी, गौ, बेल आदि चतुष्पदजीवका अपने कुलानुमान सुख पावे (कुलानुमान यह है कि) राजा एवं धनी लोगोंके हाथी, घोडे आदि और कृषकादि जनोंके गौ, भैंस, बकरी आदि स्वबुद्धि बलसे ज्योतिषी कहते हैं (बुद्ध्या वा जातिकुलदेशान्) यह वराहमिहिरका वचन प्रमाण भी है और उसका धन दान धर्मादि अच्छे कार्योंमें व्यय होवे स्त्रीके निमित्त (स्त्रीवश होनेसे) कुटुम्ब (अपने बंधुवर्गमें) कलह होवे तथा लाभके निमित्त बडे बडे यत्न अनेक प्रकारसे करे तोभी अपनेही अहंकार वा कमनसीबीसे संपूर्ण यत्न व्यर्थ करके लाभकी हानि करे. (प्र०) धनहीन हो कृतघ्न (भलेका बुरा माननेवाला) श्रद्धारहित कुमित्र युक्त ठग होवे ॥ २ ॥

तृतीये यदाहर्मणिर्जन्मकाले प्रतापाधिकं विक्रमं चातनोति॥तदा सोदरैस्तप्यते तीर्थचारी सदारिक्षयः सङ्करेशं नरेशात् ॥३॥

अर्थ--सूर्य लग्नसे तीसरा जिसका हो वह प्रतापी और पराक्रमी होता है यद्वा प्रताप झलकता हो जिसमें ऐसा पराक्रम पुरुषार्थ करता है और सहोदर भाइयोंसे संतप्त (संतापयुक्त) रहे तीर्थयात्रा करनेवाला होवे संग्राममें सर्वदा शत्रुओंका क्षय करे और राजासे कल्याण (मंगल) पावे (प्र०) निरोगी दृष्टिहीन परोपकारी विख्यात विवेकी विद्यावान् होवे ॥ ३ ॥

तुरीये दिनेशेऽतिशोभाधिकारी जनः संलभेद्विग्रहं बन्धुतोऽपि ॥ प्रवासी विपक्षाहवे मानभङ्गं कदाचिन्न शान्तं भवेत्तस्य चेतः॥४॥

अर्थ—जिस मनुष्यका सूर्य जन्ममें लग्नसे चौथा हो तो शोभायुक्त तथा अधिकारी स्वतःसिद्ध अर्थात् खुद मुख्त्यार होवे यद्वा अतिशोभायुक्त जो अधिकार है

जिनसे सर्व साधारणमें अतिमान्यता मिलती है ऐसे द्रव्य (पदार्थ) वाला होवे और बंधुवर्ग तथा अन्य जिस किसी मनुष्यसे कलह रहे तथा शत्रुसंग्राममें मानहानि (इज्जतहतक) होवे विदेशमें अधिक रहे और उसका मन सर्वदा व्याकुल रहे कदाचित् भी शांत न रहे.(प्र०) कृतघ्न ईर्षालु दूसरेकी हानि करनेवाला धनरहित होवे उद्धतस्वभाव स्त्रीके वशवर्ती झगडालु विरूप देह झूंठ बोलनेवाला होवे ॥ ४ ॥

सुतस्थानगे पूर्वजापत्यतापी कुशाग्रा मति-
र्भास्करे मन्त्रविद्या॥रतिर्वञ्चने संचकोऽपि
प्रमादी मृतिः क्रोडरोगादिजा भावनीया॥५॥

अर्थ—जिसके जन्ममें सूर्य पंचम भावका हो तो अपने प्रथम पुत्रका संताप अर्थात् उसके शोकसे क्लेश पावे और नीतिशास्त्र यद्वा (आगम) मंत्रशास्त्र जानने-वाला होवे प्रमाद करनेवाला होवे असावधान रहे धनसं-

चय करे बुद्धि उसकी कुशके अग्र भागके तुल्य अति तीक्ष्ण अति सूक्ष्म वस्तुविचारशीला होवे तथा लोगोंके ठगनेवाला ठग भी होवे और कुक्षिरोगादिसे उसकी मृत्यु जाननी (प्र०) अल्पसंतान होवे नम्रतारहित दुष्टकाम करनेवाला व्यसनी पित्ताधिक बहुत शत्रुवाला होवे५॥

रिपुध्वंसकृद्भास्करो यस्य षष्ठे तनोति व्ययं राजतो मित्रतो वा॥कुले मातुरापच्चतुष्पादतो वा प्रयाणे निषादैर्विषादं करोति ॥६॥

अर्थ-लग्नसे छठे सूर्यका फल है कि शत्रु जीतने वा मारनेवाला होवे तथा मित्रके कार्यनिमित्त और राजाके दंडमें धनव्यय (धनक्षय) करे यात्रा (सफर) में निषादों (भीलों) से विवाद और क्लेश पावे अर्थात् चोरोंसे लूटा जावे मामाके कुलकी हानि यद्वा उक्त कुलसे विपत्ति पावे तथा घोडे आदि पशुओंसे आपत्ति पावे (प्र०) शत्रुरहित रूपवान् नम्र सुजनसंगी अतिथिपूजक बांधवोंका प्रिय होवे ॥ ६ ॥

घुनाथो यदा द्यूनयातो नरस्य प्रियातापनं पिण्डपीडा च चिन्ता ॥ भवेत्तुच्छलब्धिः क्रये विक्रयेऽपि प्रतिस्पर्द्धया नैति निद्रां कदाचित् ७

अर्थ–जिसके जन्ममें सूर्य सप्तम हो तो उसकी स्त्री क्लेशी रहे तथा शरीरभी पीडित रहे सर्वदा चिंतायुक्तभी रहे व्यापार (वस्तुक्रयविक्रय) में लाभ अल्पतर होवे और मत्सर वा वादविवादके चिंताओंमें कभी नींद न आवे (प्र०) कुरूपी दुष्टस्त्रीवाला कफ वायुरोगयुक्त होवे तथा मित्रता किसीसे न रक्खे कामातुर होवे॥ ७॥

क्रियालम्पटं त्वष्टमे कष्टभाजं विदेशीयदा-रान् भजेद्वाप्यवस्तु ॥ वसुक्षीणता दस्युतो वा विलम्बाद्रिपद्रुद्युता भानुरुग्रं विधत्ते ॥८॥

अर्थ–जन्मलग्नसे सूर्य आठवां हो तो वह मनुष्य समस्त व्यवहारोंमें धूर्त हो इसी धूर्ततासे कष्ट भी पावे परदेशीय एवं असमान गोत्रजा और वेश्यासे गृहकृत्य (घरद्वार) करे अर्थात् अगम्यागामी अभक्ष्यभक्षी होवे

चोरसंगसे और आलस्यसे धन क्षीण होवे गुप्त विपत्ति पावे यद्वा परस्त्रीसंसर्गसे गुह्येंद्रिय रोगादि करके पीडित रहे. (प्र०) परदेशवासी हीनकर्मा क्षुधातुर रोगयुक्त लोकानुराग (प्रेम) रहित होवे ॥ ८ ॥

दिवानायके दुष्टता कोणयाते न चाप्नोति चि-
न्ताविरामोऽस्य चेतः॥तपश्चर्यया‍ऽनिश्चया-
पि प्रयाति क्रियातुंगतां तप्यते सोदरेण॥ ९॥

अर्थ–जिसका सूर्य नवम स्थानमें हो तो अकस्मात् भी तप जप नियमादि करनेवाला होवे इसी कृत्यके प्रभावसे पूज्यता (माननीयता) पावे दांभिक होनेपरभी लोकमान्यता पावे तथा भाइयोंके कारण संतापयुक्त रहे दुष्टतासे चित्त नित्य चिंताकुल रहे कभी शांति न पावे (प्र०) विख्यात कीर्ति राजाका प्रिय पराये धनसे धन-वान् धर्मरहित बुद्धिहीन होवे ॥ ९ ॥

प्रयातेंऽशुमान् यस्य मेषूरणेऽस्य श्रमः सिद्धि-
दो राजतुल्यो नरस्य ॥ जनन्यास्तथा यातना-
मातनोति क्लमः संक्रमेद्वल्लभैर्विप्रयोगः ॥ १० ॥

अर्थ–जिसका सूर्य दशवें स्थानमें हो तो उसकी माता रोगसे क्लेशित रहे और पराक्रमी होवे राजाओं-केसे तुल्य सकलोद्यमी होवे प्रियजन मित्र स्त्रीपुत्रोंसे विषमता रहनेसे ग्लानि (दिक्कत) रहें. (प्र०) धनी भाग्यशाली बहुत मित्रवाला रूपसौभाग्ययुक्त विनययुक्त गुरुदेवताका भक्त होवे ॥ १० ॥

रवौ संलभेत्स्वं च लाभोपयाते नृपद्वारतो राज-मुद्राधिकारात् ॥ प्रतापानले शत्रवः संपतन्ति श्रियोऽनेकधा दुःखभङ्गोद्भवानाम् ॥ ११ ॥

अर्थ–सूर्य ग्यारहवें भावमें हो तो वह मनुष्य राज-द्वारासे धन पावे तथा राजाके दिये मुद्राधिकार हुकूमतसे एवं अनेक प्रकारके राज्याधिकारोंके प्रभावसे घोडा हाथी आदि संपत्ति पावे तथा इसके प्रतापरूपी अग्निमें शत्रु पडते रहें अर्थात् इसके शत्रु परास्त हो जावें और यहभी फल है कि संतानके लिये दुःखितभी रहे.(प्र०) धनी भाग्यशाली विचारशील उत्तम भोजन वस्त्रादि भोग-

नेवाला वाहनयुक्त प्रिय वाणी बोलनेवाला कामकला (रतिक्रीडा) में चतुर होवे ॥ ११ ॥

रविर्द्वादशे नेत्ररोगं करोति विपक्षाहवे जायतेऽसौ जयश्रीः॥स्थितिर्लब्धया लीयते देहदुःखं पितृव्यापदो ह्यानिरध्वप्रदेशे ॥ १२ ॥

अर्थ–जिसके जन्मलग्नमें बारहवें स्थानमें सूर्य हो तो उसके मंददृष्टि (नेत्रदोष) रहे शत्रु जीतनेके अभिलाषासे संग्राममें स्थिति पायकर विजयका डंका बजावे परंच मार्गमें धनहानिभी होवे और शरीरमें क्लेशसे अति दुःखी रहे पिता एवं चाचा ताऊके पक्षसे क्लेश मिले यद्वा उसी संग्रामसंभव मार्गमें उक्तजनोंके डाकूसे लूटे जाने अथवा मारे जानेसे आपत्ति होवे दुर्जनोंके संगसे धन व्यर्थ लुटावे शत्रुसे नित्य संतप्त रहे दुष्ट कर्म करे स्वयं दुष्ट होवे ॥ १२ ॥

इतिसूर्यभावफलानि ।

अथ चन्द्रभावफलानि।

विधुर्गोकुलीराजगः सन्वपुस्थो धनाध्यक्ष-
लावण्यमानन्दपूर्णम् ॥ विधत्ते धनं क्षीणदेहं
दरिद्रं जडं श्रोत्रहीनं नरं शेषलग्ने ॥ १ ॥

अर्थ–अब चंद्रभावफल कहते हैं कि जिसके जन्मका चंद्रमा लग्नमें मेष कर्कट वृष राशिमेंसे किसीमें हो तो धनाधीश बहुत धनका मालिक होवे चित्त नित्य आनंदसे परिपूर्ण रहे और राशियोंका हो तो अधर्मी होवे नीच काम करे देह क्षीण निर्बल रहे वीर्य उसका क्षीण रहे दरिद्री धनहीन होवे जडमति(मूर्ख बुद्धि) होवे अथवा कर्णेंद्रिय रहित बधिर (बहिरा) होवे. (प्र०) पूर्ण चंद्र हो तो भाग्यशाली सुरूप होवे चंद्रमा क्षीण हो तो शरीर कटे फटे कुरूप होवे तथा पापी झूंठा मित्र रहित होवे॥ १

हिमांशौ वसुस्थानगे धान्यलाभःशरीरेऽतिसौ-
ख्यं विलासोऽङ्गनानाम् ॥ कुटुम्बे रतिर्जायते

तस्य तुच्छं वशं दर्शने याति देवाङ्गनापि ॥ २ ॥

अर्थ–चंद्रमा दूसरे भावमें हो तो शरीर उसका अति सुखी रहे स्त्रियोंके विलासका सौख्य रहे कुटुंबमें प्रीति अल्प रहे तथा रूपवान् होवे जिसके देखनेसे देवताओंकी स्त्रियाँभी मोहित होकर वशवर्ती हो जावें इतर मनुष्योंकी तो क्या कहनी है. (प्र०) धनवान् सर्व संपत्तिवाला प्रिय वचन बोलनेवाला देवता ब्राह्मणोंका भक्त बडा प्रतापी मित्रसंयुक्त होवे ॥ २ ॥

विधौ विक्रमे विक्रमेणैति वित्तं तपस्वी भवेद्भा-मिनीरञ्जितोऽपि ॥ कियच्चिन्तयेत्साहजं तस्य शर्मप्रतापोज्ज्वलो धर्मिणो वैजयन्त्या॥ ३ ॥

अर्थ–जिसके लग्नसे चंद्रमा तीसरा हो तो विक्रम उद्यमसे वित्त (धन) संग्रह करे और स्वरूपवान् स्त्री उसे अपने रूप यौवन छटासे लुभावे तौ भी वह जितेंद्रिय तपस्वी धर्मात्मा होवे धर्मसे लोभादिकोंको जीत रक्खे तथा यशस्वी प्रतापवान् होवे भाइयोंका सुख भी बहुत

होवे. (प्र) रूपवान् भाग्यशाली रमणीय स्त्रियोंका प्यारा समस्त कला विद्या जाननेवाले संतानमें प्रेम रखनेवाला होवे और बेटे नाती पोते बहुत होवें ॥ ३ ॥

यदा बन्धुगो बान्धवैरत्रिजन्मा नृपद्वारसर्वाधिकारी सदैव॥वयस्यादिमे तादृशं नैव सौख्यं सुतस्त्रीगणात्तोषमायाति सम्यक् ॥ ४ ॥

अर्थ—चंद्रमा लग्नसे चतुर्थभावमें हो तो वह मनुष्य बांधव इष्टमित्रोंसे सुख पावे तथा स्त्रीपुत्रोंसे संतोष प्रसन्नता पावे और राजद्वारमें सर्वाधिकारी (समस्त कार्योंमें अधिकारी) होवे ऐश्वर्यसे उन्मत्त एवं दांभिक घमंडखोरभी होवे पहिली अवस्था बीस पचीसवर्ष पर्यंत ऐसा सुख न पावे दूसरी अवस्थासे पूर्ण फल मिलताहै.(प्र०) बहुत सुख भोगनेवाला विख्यात स्त्रियोंका प्रिय गुरुदेवताका भक्त नम्र निरोगी तथा शत्रुरहित होवे ॥ ४ ॥

यदा पञ्चमे यस्य नक्षत्रनाथो ददातीह संतान-

संतोषमेव ॥ मतिं निर्मलां रत्नलाभं च
भूमिं कुसीदेन नानामयो व्यावसायात् ॥ ५॥

अर्थ-जिसका चंद्रमा लग्नसे पंचम भावमें हो उसको संतानका सुख मिले बुद्धि निर्मल रहे रत्नादिलाभ होवे राजसेवा अन्यप्रकारसे भूमिभी मिले तथा किसी कालां-तरीय व्यवहारसे जो उद्यम है उनसे अनेक प्रकारसे लाभ उठावे. (प्र०) पुत्रवान् विद्यावान् देवताब्राह्मणोंका भक्त निष्कपट स्वभाव प्रियवाणी बोलनेवाला राजाका प्रिय होवे तथा शत्रु उसके न होवें ॥ ५ ॥

रिपौ राजते विग्रहेणापि राजा जितास्तेपि भूयो
विधौ संभवन्ति ॥ तदग्रेऽरयो निष्प्रभा भूय-
सोऽपि प्रतापोज्ज्वलोमातृशीलो न तद्वत्॥६॥

अर्थ-चंद्रमा छठा हो तो वह मनुष्य बहुल शत्रुवाला होवे यदि राजाभी इसका शत्रु हो जावे तौभी इसका प्रताप उज्ज्वलितही रहे अपने प्रभावसे शोभायमान रहे तथा सर्वशत्रु इससे पराजित (हारे) ही रहें तौभी शत्रु

ओंके विना कभी खाली न रहे पुनः उठते ही रहें और अमातृभक्त अपनी माताकी सेवामें अच्छा न रहे.(प्र०) प्रधानपुरुष होवे परंतु रोगी रहे शत्रु नित्य दुःख देवे शरीर कुरूप हो दुर्बुद्धि हो सुख न पावे दूसरेको ठगनेवाला होवे ॥ ६ ॥

ददेद्दारशं सप्तमे शीतरश्मिर्धनित्वं भवेदध्ववाणिज्यतोऽपि॥रतिं स्त्रीजनेऽनिष्टभुग्लुब्धचेताः कृशः कृष्णपक्षे विपक्षाभिभूतः ॥७॥

अर्थ—लग्नसे सप्तम चंद्रमा स्त्रीसुख देता है तथा मार्ग कर्म एवं व्यापारसे यद्वा देशांतरीय व्यापारसे धनवान् करता है और स्त्रीसंग विशेष हेता है किंच कृष्णपक्षमें स्त्रियोंके साथ प्रेमवार्तालाप दृष्टि प्रेममात्र करता है रतिसुख नहीं और मीठे पदार्थोंमें चित्त अतिलोभी रहता है तथा चंद्रमा क्षीण हो तो सर्वदा शत्रुओंसे हारा हुआ भी रहता है (प्र०) धर्मात्मा होवे दयावान् प्रसन्नमूर्ति ऐश्वर्यवान् विख्यातकीर्ति सद्बुद्धि होवे ॥ ७ ॥

सभा विद्यते भेषजी तस्य गेहे पचेत्कहिंचि-
त्काथिमुद्गोदकानि ॥ महाव्याधयो भीतयो
वारिभूताः शशी क्लेशकृत्संकटान्यष्टमस्थः८॥

अर्थ–जिसके चंद्रमा अष्टमभावमें हो तो उसके घरमें बहुधा वैद्योंके समाज रहें एवं मूँगका पानी पकता रहे अर्थात् ज्वरादिरोग लगेही रहे अथ च (वारिभूताः भीतयः) जलसे है निदान जिन्होंका ऐसे पांडु क्षय आदि रोग होवें यद्वा जलमें डूब जानेका भय होवे और अनेक संकट दुर्जनोंसे आपत्ति भी होती है यह अष्टम चंद्रमा सर्वदा कष्टही देनेवाला होता है. (प्र०) अल्पपराक्रमी अल्पायु झूँठ बोलनेवाला निर्दयी (कठोर) स्नेहरहित परस्त्रीगमन करनेवाला व्यर्थ भ्रमण करनेवाला इष्ट मित्र भाइयोंसे रहित होवे ॥ ८ ॥

तपोभावगस्तारकेशो जनस्य प्रजाश्च द्विजा
वन्दिनस्तं भवन्ति ॥ भवत्यव भाग्याधिको
यौवनादेः शरीरे सुखं चन्द्रवत्साहसं च॥ ९ ॥

अर्थ–जिसके चंद्रमा नवम स्थानमें हो तो उसकी स्तुति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और मागध बंदिजन सभी करते हैं अर्थात् स्तुति करने योग्य वह पुरुष होता है क्योंकि वह धन यौवनसंपन्न तथा समस्त व्यापार एवं भाग्यशाली भी होता है तथा शरीर सुखी रहताहै साहसी होता है चतुरबुद्धि रहता है और चंद्रमाके समान दर्शनीय होताहै अथवा चंद्रमाके तुल्य कभी कभी छटा घटती बढती जाती है. (प्र०) मित्र बहुत होवें अन्नादि बहुत हों शत्रु उससे नम्र रहे सर्वसिद्धिवाला होवे सज्जन उसकी नित्य प्रशंसा करे ॥ ९ ॥

सुखं बान्धवेभ्यः खगे धर्मकर्मा समुद्राङ्गजेशं नरेशादितोऽपि॥नवीनाङ्गनावैभवे सुप्रियत्वं पुरोजातके सौख्यमल्पं करोति ॥ १० ॥

अर्थ–चंद्रमा दशम भावमें हो तो मनुष्य पुण्य करने-वाला होवे बांधवोंसे सुख मिले तथा राजा महाराजा आदि श्रीमंत लोगोंसे कल्याण मिले तथा नवीन स्त्रियोंका

स्वामित्व एवं प्रियत्व मिले अर्थात् नवयौवना स्त्रियोंके साथ हासविलासादि सुख होवे प्रथम पुत्रसे अल्प सुख होवे अथवा भृत्य (नौकर) आदियोंका सुख बहुत कम मिले (प्र०) राजाका प्रिय होवे इष्टमित्रोंसे प्रतिष्ठा मिले अतिथियोंको प्रिय माने गुरु तथा देवताओंका भक्त होवे ॥ १० ॥

लभेद्भूमिपादिन्दुना लाभगेन प्रतिष्ठाधिकाराम्ब-
राणि क्रमेण ॥ श्रियोऽथ श्रियोन्तःपुरे विश्रम-
न्ति क्रिया वैकृती कन्यकावस्तुलाभः ॥ ११ ॥

अर्थ—चंद्रमा ग्यारहवें भावमें हो तो राजासे क्रम-पूर्वक वस्त्र धन और अधिकार हुकूमत मिले और अंतः-पुर घरमें स्त्रियाँ धनादि ऐश्वर्यसंपन्न होकर प्रसन्नतासे स्थिर रहें तथा अनेक पदार्थोंसे यद्वा व्यापारादिसे लाभ बहुत होवे जो कुछ कृत्य करे उसमें विकार होवे और कन्यालाभ होवे. (प्र०) चतुर होवे सर्वदा लाभ होवे

रूपवान् तथा (उदार) सुखी होवे सज्जनोंमें अनुराग रखे शत्रुहीन रहे ॥ ११ ॥

शशी द्वादशे शत्रुनेत्रादिचिन्ता विचिन्त्यः सदा सद्व्ययो मंगलेन ॥ पितृव्यादिमात्रादितोन्तर्विषादो न चाप्नोति कामं प्रियाल्पप्रियत्वम्॥ १२॥

अर्थ-जो चंद्रमा बारहवां हो तो शत्रुसे भय होवे नेत्र आदि अंगोंमें रोग होनेसे चिंता भी जानना तथा विवाहादि मंगल कार्यमें सद्व्यय (उत्साहसहित धन खर्च) होवे और चाचा ताऊ मामा और इनके कुटुंबसे मनमें विषाद (दुःख) होवे अर्थात् उनसे प्रेमसंबंध न रहे तथा मनकी अभिलाषा इस मनुष्यकी कदाचित्ही पूर्ण न होवे. (प्र०) रक्तसंबंधी रोगसे पीडित रहे वैरवान् रहे शत्रु बहुत रहें आयु भी कम होवे झूंठ बहुत बोले ॥ १२ ॥ इति चन्द्रभावफलानि ।

अथ भौमभावफलानि ।

विलग्ने कुजे दण्डलोहादिभीतिस्तपेन्मानसे

केसरी किं द्वितीयः ॥ कलत्रादिघातःशिरो-
नेत्रपीडाविपाके फलानां सदैवोपसर्गः ॥ १ ॥

अर्थ--मंगलका भावफल कहते हैं कि जिसके जन्ममें मंगल लग्नका हो तो दंड (लट्ठी) यद्ध, लोह-शृंखला बेडी हथकडी शूली आदिसे भय होवे और स्त्री पुत्रादि नाश होवें शिर तथा नेत्रोंमें पीडा होवे और जो कुछ कार्य करे उसके परिणाम (नतीजा) में विघ्न हो जावे कार्यसिद्धि न होने पावे इस कारण मन संतप्त रहे और उद्यमी होवे कार्योद्यममें तो सिंहसमान अर्थात् दूसरा सेहर होवे. (प्र०) वातपित्त रोगसे पीडित रहे कुरूप हो शक्ति (सामर्थ्य) रहित बुद्धिहीन निरर्थक कार्योंमें धनव्यय करे कृतघ्नभी होवे ॥ १ ॥

भवेत्तस्य किं विद्यमाने कुटुंबे धनेऽङ्गारको
यस्य लब्धे धने किम् ॥ यथा त्रायते मर्कटः
कण्ठहारं पुनः सन्मुखं को भवेद्वादभग्नः ॥२॥

अर्थ—जिसके मंगल लग्नसे दूसरे भावमें हो तो उसके

पास धन हो और धनका आगमभी होता रहे तौभी कुटुंब(अपने मनुष्यों) के अर्थ उक्त धन न आवे अर्थात् इस धनका फलोदय किसीकोभी न होवे जैसे कोई गुंज (लाल रत्तियों) के माला बनाकर (मर्कट) वानरके गलेमें पहिनाय दे तो वह वानर उस मालाको उत्तम पदार्थ जान क्षणमात्र प्रसन्न होकर रक्षा करता है ऐसे वह कृपण भी धनकी रक्षा करता है तथा मूर्खभी होवे अर्थात् इसके वाग्वादमें कोई न जीते तथा एकवार जो हार गया वह फिरके उसका मुकाबिला न करे. (प्र०) धनहीन सर्वसाधारणसे विरोधी, कठोर वाणीवाला, दुष्ट-बुद्धि प्रतापरहित होवे मैत्री किसीसे न रक्खे ॥ २ ॥

कुतो बाहुवीर्यं कुतो बाहुलक्ष्मीस्तृतीयो न चेन्मङ्गलो मानवानाम् ॥ सहोत्थव्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहास्यं कथं स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थ--जिसके मंगल तीसरे स्थानमें भी न हो तो उस मनुष्यको भुजबल (बाहुका पराक्रम) कहांसे होवे

तथा अपने बाहुबलसे कमाया धन कहांसे होवै अतः उसके भाइयोंकी पीडा कौन कहे और तपस्या बिगड जानेसे लोकमें उपहास (हँसी) कैसी होवे अर्थात् तीसरे मंगलवाला मनुष्य पराक्रमी तथा अपने पराक्रमसे कमाये धनयुक्त होवे भ्रातृपीडा होवे तपादिकमें उपहास होवे. (प्र०) भाइयोंका ताबेदार रहे निरोगी तथा जीतनेवाला होवे राजासे मान पावे धनवान् पुत्रवान् उदार धर्मात्मा होवे ॥ ३ ॥

यदा भूसुतः संभवेत्तुर्यभावे तदा किं ग्रहाः सानुकूला जनानाम् ॥ सुहृद्वर्गसौख्यं न किंचिद्विचिंत्यं कृपावस्त्रभूमिर्लभेद्भूमिपालात् ॥ ४ ॥

अर्थ--जिनका मंगल चतुर्थमें हो तो उन मनुष्योंके अन्य ग्रह सानुकूल (शुभ फल देनेवाले) हों तोभी क्यो कर सकते हैं अर्थात् व्यर्थ हैं तथा उन मनुष्योंके बंधु मित्र माता आदियोंका सुख कुछभी न होवे शुभफल इतनाही है कि राजाकी कृपासे वस्त्र भूमि मिलते हैं(प्र०) सुख न पावें घमंड इसका न रहने पावे बुद्धिहीन तथा बन्धु-

हीन रहे कार्य्यमें तत्पर रहे खर्च बहुत करे निंदकभी होवे ॥ ४ ॥

कुजे पञ्चमे जाठराग्निर्बलीयान्न जातं नु जातं निहन्त्येक एव ॥ तदानीमनल्पा मतिः किल्बिषेऽपि स्वयं दुग्धवत्तप्यतेऽन्तःसदैव॥५॥

अर्थ—मंगल पंचम भावमें हो तो उस मनुष्यका उदराग्नि प्रबल होता है अर्थात् क्षुधा एवं पाचनशक्ति बहुत होती है तथा पापकर्ममें बहुत बडी बुद्धि होती है आपभी मनमें उपलेकी आँचके दूधके तुल्य सर्वदा संतप्त (व्याकुल) रहता है और एकही पंचम मंगल जितने पुत्र होते जावें उतनोंकोही मारता जाता है. (प्र०) संतानहीन रहे पापी होवे औरोंसे भर्त्सना (झाडू) पावे विद्याहीन रहे मित्रताभी किसीसे न रक्खे ॥ ५ ॥

न तिष्ठन्ति षष्ठेऽरयोऽङ्गारके वै तदंगैरिताः संगरे शक्तिमन्तः ॥ मनीषासुखी मातुलेयो न तद्वद्विलीयेत वित्तं लभेतापि भूरि॥६॥

अर्थ–जिसका मंगल छठे भावमें हो तो उसके शत्रु इसके किसी अंगमात्रसे डरकर सन्मुख न ठरह सकें अंग नेत्रकी क्रूरदृष्टि आदि जानना अथवा स्वाम्यमात्यादि राजाओंकेभी होते हैं तथा उक्त मनुष्यके किसी अमात्य मंत्री आदिसे बलवान् हो तोभी हारकर सन्मुख नहीं देखसकते हैं तथा बुद्धि चतुर होवे उसके मामाका पुत्र सुखी न रहे और धन एक वार नष्ट होकर फिर धनवान् होवे शत्रु न होवे अपने कुलमें प्रधान होवे रूप दर्शनीय होवे सज्जन इसकी प्रशंसा करें नम्र होवे और अच्छा शील (स्वभाव) रक्खे ॥ ६ ॥

अनुद्धारभूतेन पाणिग्रहेण प्रयाणेन वाणिज्य-
तो नो निवृत्तिः ॥ मुहुर्भंगदः स्पर्धिनां मेदि-
नीजः प्रहारार्दनैः सप्तमे दम्पतिघ्नः ॥ ७ ॥

अर्थ–मंगल सप्तम हो तो वह मनुष्य शत्रुसे प्रहार पीडनादि करके वारंवार भंग (हार) पावे तथा स्त्रीपुरुषका नाश करता है अर्थात् पुरुषका सप्तम मङ्गल

स्त्रीनाश स्त्रीका पुरुषनाश करता है और विवाहकृत्य निश्चय हुएमें भी विघ्न होवे प्रथम विवाहकृत्य बना बनाया बिगड जावे तथा व्यापारके लिये यात्रा (गमन) करनेमें हटकर आना कठिन होवे अर्थात् विवाहके और व्यापारकी आशामें बहुत कालपर्यंत विदेशमें रहे नित्य विदेशवास करे स्त्री अच्छी न होवे कलह करता रहे शत्रु बहुत होवें नीच जनोंमें अनुराग रक्खे साहसी भी होवे ॥७॥

शुभास्तस्य किं खेचराः कुर्युरन्ये विधानेऽपि
चेदष्टमे भूमिसूनुः ॥ सखा किं न शत्रूयते
सत्कृतोऽपि प्रयत्ने कृते भूयते चोपसर्गैः॥८॥

अर्थ–जिसका मंगल अष्टम भावमें हो तो नवम स्थानमें शुभ फलदाता ग्रह हों तो भी क्या कर सकता है अर्थात् अन्य शुभफलोंको दबाकर यह मङ्गल अपने क्रूर फलको प्रबलही करता है जैसे अपना परममित्र जिसका भलीभांति सत्कार किया हो वहभी शत्रु बनही

तो जाता है जो किसी कार्यका आरंभ करे तो अनेक विघ्नोंसे वह कार्य बिगड जाता है (प्र०) शरीरमें शस्त्रका दाग है कांतिहीन हो दुष्ट हाकीमकी सेवामें रहे सुमित्रसे चेष्टा विशेष रक्खे कृपा चित्तमें न होवे मित्रता भी न जाने ॥ ८ ॥

महोग्रा मतिर्भाग्यवित्तं महोग्रं तपोभावगो
मङ्गलस्तं करोति ॥ भवेन्नादिमः स्यालकः
सोदरो वा कुतो विक्रमस्तुच्छलाभोविपाके९॥

अर्थ–नवम भावका मंगल मनुष्यको भाग्यवान् एवं धनवान् तेजवान् भी करता है तथा बुद्धि उसकी अति-क्रूरा (निठुरी) होती है और जेष्ठ भ्राता तथा जेष्ठ शालक (शाला) उसके नहीं रहते तथा जो कुछ उद्यम करे तो उसके परिणाम लाभके समयपर अल्पही प्राप्ति होवे. (प्र०) कुधर्मी कुरूप और भाग्यहीन होवे बंधुवर्गसे रहित होवे अभिमानी न हो देह संतप्त (चिंता-युक्त) रहे मति (बुद्धी) उत्तम न होवे ॥ ९ ॥

कुले तस्य किं मंगलो मंगलो नो जनैर्भूयते मध्यभावे यदि स्यात्॥स्वतःसिद्ध एवावतंसी-यतेऽसौ वराकोऽपि कण्ठीरवः किं द्वितीयः १०

अर्थ--अतिशयोक्ति है कि जिसके मङ्गल दशम न हो तो उसके कुलमें मंगल कहांसे हो ? अर्थात् दशम मङ्गल कार्यकर्ता है तथा भृत्य (सेवक) बहुत रहते हैं तथा अपनेही उद्यमसे कार्यसिद्धि करके मनुष्योंमें विरा-जमान रहता है जैसे हीन कुलमें उत्पन्न हुआ भी सिंहके समान पराक्रम करता है मानो दूसरा सिंहही है. (१०) राजासे धनादि पाकर संतुष्ट रहे शत्रुनाश होवे अपने बंधु जनोंसे मान पावे चरित उसका प्रशंसनीय होवे अभिमान विख्यात होवे ॥ १० ॥

कुजःपीडयेल्लाभगोपत्यशत्रून् भवेत्संमुखो दु-र्मुखोऽपि प्रतापात्॥ धनं वर्धते गोधनैर्वाहनैर्वा सकृच्छून्यतार्थें च पैशुन्यभावात् ॥ ११ ॥

अर्थ--ग्यारहवें भावका मंगल पुत्र तथा शत्रुओंको पीडन करता है इस मनुष्यका मुख दुष्ट हो तोभी अपने

प्रताप बढनेसे सर्वसाधारणमें दर्शनीय (सुरूपवान्) गिना जावे अथवा जो मनुष्य इसका शत्रु है यद्वा इसको दुष्ट वचन कहता है वहभी इसके प्रतापसे दबकर सुमुख, (अच्छीवाणी)कहनेवाला हो जावे और गौ, भैंस, घोडे, हाथी, ऊंट आदि वाहन पशुके व्यापारसे धनसंग्रह करे कुछ अंश चोरी वा ठगपनेसे धन ग्रहण करनेकाभी होवे इस निमित्त लोगोंमें अपना धन छिपाकर निर्द्धन जैसा बना रहे. (प्र०) धनवान् राजमानी प्रतापी होवे सर्वत्र पूजा पावे बहुत मनुष्योंपर अधिकार(हुकूमत) रहे॥ ११ ॥

शताक्षोऽपि तत्सक्षतो लोहघातैः कुजो द्वादशोऽर्थस्य नाशं करोति ॥ मृषा किंवदन्ती भयं दस्युतो वा कलिं पारधीहेतुदुःखं विचिन्त्यम् ॥ १२॥

अर्थ-मंगल बारहवां हो तो धननाश होवे तथा साक्षात् इन्द्रके शरीरमेंभी लोहशस्त्रके घातका चिह्न होवे इतर मनुष्योंकी तो क्या कथा है और शत्रुहंताभी होवे तथा झूठी जनश्रुति (कहावत) भी इस मनुष्यकी निंदा

पक्षमें होवे तथा सिंह सर्पादि दुष्ट जनोंसे भय होवे अथवा कलह होवे (पारांघि) भृत्यके हेतु दुःख होवे (प्र०) धन व्यर्थ कार्यमेंभी बहुत खर्च करे शत्रु बहुत रहें पापभी बहुत हो दुर्व्यसनी होवे अतिलालची और धर्मरहितभी होवे ॥ १२ ॥

इति भौमभावफलानि)

अथ बुधभावफलानि।

बुधो मूर्तिगो मार्जयेदन्यरिष्टं वरिष्ठा धियो वैखरीवृत्तिभाजः ॥ जना दिव्यचामीकरीभूतदेहाश्चिकित्साविदो दुश्चिकित्सा भवन्ति ॥ १ ॥

अर्थ–बुधके भावफल कहते हैं कि, जन्मलग्नमें बुध हो तो मनुष्यके और ग्रहोंके अरिष्ट फलभी नहीं होते बुद्धि श्रेष्ठ होती है तथा सुवर्णके समान दिव्य शरीर होते हैं वैद्यविद्यामें चतुर होते हैं और तसवीर लिखने आदि शिल्पविद्यासे वृत्ति (कुटंब पोषणादि आजीवन) करते हैं अथवा कुटिलतामें ऐसे निपुण होते हैं कि

किसीकेभी साध्य (वशीभूत) नहीं होते. (प्र०) संतान बहुत हो धर्मात्मा तथा मानी होवे बडा प्रतापी गुणोंसे युक्त राजाके संमति पूछनेके योग्य होवे और पापोंसे वर्जित रहे ॥ १ ॥

धने बुद्धिमान् बोधने बाहुतेजाः सभासंगतो भासते व्यास एव ॥ पृथूदारता कल्पवृक्षस्य तद्वद्बुधैर्भण्यते भोगतः षट्पदोऽयम् ॥ २ ॥

अर्थ-जिसका बुध दूसरे भावमें हो तो वह बुद्धिमान् एवं स्वबाहुबलसे पुरुषार्थ करनेवाला होता है तथा पंडितसमाजमें व्यासदेवके समान शोभायमान होता है भोगविषयमें सर्व भोग भोगनेवाला भ्रमरके नाईं रहता है और दानके विषयमें कल्पवृक्षके समान उदार होता है (प्र०) धनवान् प्रियवाणी बोलनेवाला देवता ब्राह्मणोंका भक्त पंडित सर्वदा कीर्तिमान् होवे अपने मनुष्योंसे अनुराग रक्खे ॥ २ ॥

वणिङ्मित्रतापण्यकृद्वृत्तिशीलो वशित्वं धियो

दुर्वेशानामुपैति ॥ विनीतोऽतिभोगं भजे-
त्संन्यसेद्वा तृतीयेनुजैराश्रितोज्ञे लतावान् ॥३॥

अर्थ–बुध तीसरे भावमें हो तो व्यापारियोंके साथ मित्रता रक्खे तथा व्यापारियोंकेसे काम करके आजीवन (गुजर) करता रहे नम्रस्वभाव सुशील होता है जो किसीके वशवर्ती नहीं होते उनके वशमें रहता है अथवा जो किसीके वश न हो उसे अपनी बुद्धिसे वशमें कर लेवे अपने भाइयोंसे युक्त (जैसे कोई वृक्ष किसी लतासे वेष्टित रहता है) बहुत प्रकार विषयोंको बंधुवर्गसहित भोगे यद्वा अनेक विषय भोगकर चौथी अवस्थामें गृहस्थसे अलग होकर ईश्वराराधन करे.(प्र०) प्रसिद्ध (विख्यात) ही नम्रता न जाने मित्र बहुत होवे स्त्रियोंका अतिप्यारा होवे प्रपंचच्छद्म न जाने ॥ ३ ॥

चतुर्थे चरे चन्द्रजश्चारुमित्रो विशेषाधिकृद्भू-
मिनाथांगणस्य ॥ भवेल्लेखको लिख्यते वा
तदुक्तं तदाशापरैः पैतृकं नो धनं च ॥ ४ ॥

अर्थ-बुध चतुर्थमें हो तो उस मनुष्यके मित्र अच्छे होवें तथा राजद्वारमें राजकीय कर्मका पूर्णाधिकारी होवे जिसके कहे लिखेपर राजद्वार निर्भय रहे यद्वा ऐसा अधिकार होवे कि जिसके हुकुमको अन्य लेखक लिखके प्रकाश करें और इसके पिताका धन न मिले अपने कमाये धनसे संपन्न रहे बुद्धिमान् होवे शरीर पुष्ट तथा निरोगी होवे कृषि (खेती) एवं व्यापारसे लाभ तथा सुख पावे ॥ ४ ॥

वयस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठेद्भवेत्तस्य मेधार्थसंपादयित्री ॥ बुधैर्भण्यते पञ्चमे रौहिणेये कियद्विद्यते कैतवस्याभिचारम् ॥ ५ ॥

अर्थ--जिसका बुध लग्नसे पंचम भावमें हो तो उसकी पहली अवस्था (३० वर्ष) के भीतर पुत्र न टिकने पावे कन्या हो तो जीवित रहे इस अवस्था उपरांत संतानसुख होवे तथा बुद्धि उत्तम होवे अर्थात् अपनी बुद्धिसे धन कमावे और कियन्मात्र (कुछ कदर)

मारणोच्चाटनादि कर्म कैतव (छद्म) भी करता रहे संतान थोडी होवे वीर्य (पराक्रम) वा धातु अल्प होवे पापयुक्त रहे और नित्य क्षुधासे आतुर रहे इष्टजनोंसे रहित रहे ॥ ५ ॥

विरोधो जनानां निरोधो रिपूणां प्रबोधो यतीनां विरोधोऽनिलानाम् ॥ बुधे सद्व्यये व्यावहारो निधीनां बलादर्थकृत्संभवेच्छत्रुभावे ॥ ६ ॥

अर्थ—बुध छठे भावमें हो तो बहुत मनुष्योंके साथ विरोध (कलह) रहे शत्रु इसे नित्य घेरे रहें तथा बद्ध-कोष्ठ निरोग होवे यतियों (ज्ञानी संन्यासियों) से बोध (ज्ञान) पावे धनको शुभकृत्यमें व्यय करे उत्तम व्यवहार रक्खे और अपने सामर्थ्यसे धन संग्रह करे (प्र०) शत्रु बहुत हों कलह बहुत करे मांसमें अधिक प्रेम रहे ब्राह्म-णोंकी भक्तिसे विमुख रहे नित्य आतुर (दरिद्री) रहे कामातुर भी होवे ॥ ६ ॥

सुतः शीतगोः सप्तमे संयुवत्या विधत्ते तथा
तुच्छवीर्यं च भोगे ॥ अनस्तंगतो हेमवद्दे-
हशोभां न शक्नोति तत्संपदो वानुकर्तुम् ॥७॥

अर्थ—जिसका बुध सप्तम भावमें हो यदि अस्तका न हो तो स्त्रीका सुख विशेष होवे परंतु रतिसमयमें वीर्य-साधारण (वीर्यरोक) जिससे स्त्री सुख मानती है न होवे अर्थात् क्रीडामें शीघ्रही वीर्य स्खलित हो जावे देहकी कांति सुवर्णके समान उत्तम होवे और इसके धन एवं देह-शोभाको किसीकी समृद्धि न मिले अर्थात् धन तथा कांतिमें सर्वोत्तम होवे यदि सप्तम भावमें अस्तंगत हो तो समस्त उक्तफल थोडे होते हैं ऐसे नहीं मिलते. (प्र०) सच्च बोले विषय भोगनेवाला होवे पतिव्रता स्त्री पावे, पराये उपकार करनेमें तत्पर रहे नम्र भी होवे ॥ ७ ॥

शतं जीविनो रन्ध्रगे राजपुत्रे भवन्तीह देशा-
न्तरे विश्रुतास्ते ॥ निधानं नृपाद्विक्रयाद्वा
लभन्ते युवत्युद्भवं क्रीडनं प्रीतिमन्तः ॥ ८ ॥

अर्थ–बुध अष्टम भावमें जिन मनुष्योंका होवे शतायु (दीर्घजीवी) होते हैं तथा अपने देशमें तथा परदेशोंमेंभी विख्यात होते हैं राजासे तथा व्यवहारसे धनसंचय करे और स्त्रीसंगका सुखमानभी एवं प्रगटभी बहुधा भोगते हैं परच्छिद्र ढूंढनेवाला सर्वदा रहे कफ तथा वायु रोगसे शरीर पीडित रहे कृश (माडा) हो कुरूप और कुलघाती होवे ॥ ८ ॥

बुधे धर्मगे धर्मशीलोऽतिधीमान् भवेद्दीक्षितः स्वर्धुनीस्नातको वा ॥ कुलोद्योतकृद्राजुवद्भूमिपालात्प्रतापाधिको बाधको दुर्मुखानाम्॥९॥

अर्थ–बुध नवम भावमें हो तो मनुष्य अतिशोभायुक्त यद्वा अतिधनवान् होवे धर्ममें स्वभाव रहे बडा बुद्धिमान् होवे दीक्षित (गुरुमुखसे दीक्षा संस्कार पाकर उपासक) होवे यद्वा सोमयाजी होवे तथा गंगास्नानमें प्रेम रक्खे उसीका व्रतभी धारण करे अपने कुलमें सूर्य-

समान प्रकाश करे राजकृपासेभी अधिक प्रताप बढे और दुर्जनोंका नाश (भंजन) करनेवाला होवे (प्र०) सत्य एवं सद्गुणोंसे युक्त रहे सर्वसे प्रीति रक्खे जितेन्द्रिय होवे साधुजनोंसे अनुराग करे कृषिकर्ममें प्रधान हो चतुर वाचालभी होवे ॥ ९ ॥

मितः संवदेन्नोमितं संलभेत प्रसादादिवैकारि-
सौराजवृत्ति॥ बुधे कर्मगे पूजनीयो विशेषा-
त्पितुः संपदो नीतिदण्डाधिकारात् ॥ १० ॥

अर्थ-जिसका बुध दशम स्थानमें हो वह मनुष्य पिताकी संपत्ति पावे विशेषतः सर्वलोकोंमें पूजनीय(मान्य) होवे नीतिविद्या जाने तथा दंडाधिकार (राजसंबंधी अधिकारी) होनेसे निग्रहानुग्रह (किसको दंड किसको धनादि देने) का सामर्थ्य होवे अच्छे राज्यमें राजव्यवहारशील होवे ओर अतिवाचाल तो न होवे किंतु उसकी वाणी व्यर्थ न आवे, घोडे हाथी आदि राजसंपत्तिका भोगनेवाला होवे रूपवान् भाग्यवान् शीलवान् होवे

उत्तम वस्त्र भूषण वाहनादियोंसे परिपूर्ण रहे स्त्रियोंका प्यारा और विनीत (नम्र) भी होवे ॥ १० ॥

विनालाभभावस्थितं भेशजातं न लाभो न लावण्यमानृण्यमस्ति ॥ कुतः कन्यकोद्वाहदानं च देयं कथं भूसुरास्त्यक्ततृष्णा भवन्ति ॥ ११ ॥

अर्थ—जो लाभभाव (ग्यारहवें स्थानमें) बुध न हो तो धन कहाँसे आवे तथा सुंदरता कैसी होवे ऋणरहित मनुष्य कैसे रहे और कन्याके विवाहमें देने योग्य (धनादियौतुक) दहेजकी सामग्री कहाँसे आवे बहुतसा ब्राह्मणोंको देने योग्य "जिस दानसे वह ब्राह्मण तृष्णारहित फिर मांगनेकी इच्छा न करे"कहाँसे आवे अर्थात् जिसके बुध लाभभावमें हो वह मनुष्य इतने कामोंमें समर्थ होता है. (प्र०) सुंदर दर्शनीय पंडित कवि रमणीय रोगरहित अभिमानी और राजकाज करनेमें चतुर होवे ॥ ११ ॥

न चेद्द्वादशे यस्य शीतांशुजातः कथं तद्गृहं

भूमिदेवा भजन्ति॥रणे वैरिणो भीतिमायान्ति कस्माद्धिरण्यादिकोशं शठः कोऽनुभूयात् १२॥

अर्थ–जिसके बारहवें भावमें बुध न हो तो उसके घरमें ब्राह्मण कैसे आवें संग्राममें शत्रु किससे डरें और कौनसा खल सुवर्ण आदि धनके खजानेको व्यय करे अर्थात् जिसका बुध बारहवाँ हो उसके घरमें ब्राह्मण आवें संग्राममें शत्रु भय माने दुष्टस्वभाव न होवे धनको उत्तम कार्योंमें व्यय करे. (प्र०) दरिद्री हो विषयासक्त रहे शत्रुसे जीता हुआ रहे अपने बंधुजनोंसे दबा रहे कुरूप तथा दुर्बुद्धि होवे ॥ १२ ॥

इति बुधभावफलानि ।

अथ गुरुभावफलानि ।

गुरुत्वं गुणैर्लग्नगे देवपूज्ये सुवेषी सुखी दिव्यदेहोऽल्पवीर्यः ॥ गतिर्भाविनी पारलौकी विचिन्त्या वसूनि व्ययं संबलेन व्रजन्ति ॥ १ ॥

अर्थ—जिसके जन्ममें बृहस्पति लग्नका हो तो वह मनुष्य अच्छे आभूषणोंसे शोभायुक्त रहे शरीरकी कांति स्वच्छ होवे सुखी (विषादरहित) रहे वीर्य (बल) अल्प रहे तथा पंडित चतुर होवे लोगोंकी प्रसन्नतासे बडपन पावे शरीरके अंतमें उत्तमगति स्वर्गवासादि पावे और धनादि उसके सुख भोगनेमें व्यय होवे. (प्र०) सर्वांग सुन्दर होवे भाग्यशाली विषयभोग भोगनेवाला दयावान् गुणोंसे प्रख्यात रहे शत्रु जीते रहे सर्वदा प्रसन्न रहे बडी कीर्ति पावे ॥ १ ॥

कवित्वे मतिर्दण्डनेतृत्वशक्तिर्मुखे दोषहृक् शीघ्रभोगार्त्त एव ॥ कुटुम्बे गुरौ कष्टतो द्रव्य-लब्धिः सदा नो धनं विश्रमेद्यत्नतोऽपि ॥२॥

अर्थ—जिसका बृहस्पति कुटुंब (दूसरे) भावमें हो उसको कविता (काव्यादि रचनेकी) सामर्थ्य होवे राज-काज अदालत हाकमी करनेकी सामर्थ्य होवे वाचाल होवे परन्तु मुखमें कुछ रोग भी रहा करे रतिक्रीडामें

आसक्त (कामार्त) रहे अल्पवीर्य रहे धनकी प्राप्ति कष्टसे होवे प्रयत्न करनेपर भी धनसंग्रह न रहे. (प्र०) धनवान् उदार तथा औरको सुख देनेवाला होवे एवं शत्रुका नाश करे और पराये दूषणोंकोभी मिटावे॥ २॥

भवेद्यस्य दुश्चिक्यगा देवमन्त्री लघूनां लघी-
यान् सुखं सोदराणाम् ॥ कृतघ्नो भवेन्मित्रसार्थैं
न मैत्र्यं ललाटोदये ऽप्यर्थलाभो न तद्वत् ॥ ३ ॥

अर्थ–जिसका बृहस्पति तीसरे भावमें हो वह शूद्रोंके बीच अतिशूद्र होवे भाइयोंका सुख बहुत रहे कृतघ्नभी होवे मित्रोंके साथ मित्रता न रहे भाग्योदय हुएमें भी मनोनुकूल धनलाभ न होवे जैसे भाग्योदय होनेसे राज-सभा आदिमें प्रवेश तो होवे किंतु लाभ जैसा होना चाहिये तैसा न होवे. (प्र०) सुखी रहे बुद्धिमान् होवे राजाका प्रिय होवे अतिथियोंका पूजन करे बंधुजनोंका माननीय होवे ॥ ३ ॥

गृहद्वारतः श्रूयते वाजिहेषा द्विजोच्चारितो वेद-
घोषोऽपि तद्वत् ॥ प्रतिस्पर्धिनः कुर्वते पारि-
चर्यं चतुर्थे गुरौ तप्तमन्तर्गतं च ॥ ४ ॥

अर्थ—जिसके बृहस्पति चतुर्थ भावमें हो उस मनु-
ष्यके दरवाजेपर घोडेकी हेषा (खनखनाट) नित्य सुना
जावे तथा वेदध्वनी (ब्राह्मणोंके मुखोंसे आशीर्वादार्थ
वेदमंत्रोंकी ध्वनी) सुनाई देती रहे और उसके शत्रुभी
दासवत् सेवा करें तोभी उसका मन संतप्त (सोद्वेग)
रहे. (प्र०) वाहन घोडा आदि तथा गौ महिषी आदि
पशु बहुत हों, सुखी रहे ॥ ४ ॥

विलासे मतिर्बुद्धिगे देवपूज्ये भवेज्जल्पकः क-
ल्पको लेखको वा ॥ निदाने सुते विद्यमानेऽपि
भूतिः फलोपद्रवः पक्वकाले फलस्य ॥ ५ ॥

अर्थ—जिसके बृहस्पति लग्नसे पंचम भावमें हो वह
मनुष्य भोगविलासमें बुद्धि विशेष रक्खे बहुत बोलनेवा-
ला होवे कल्पक (न्यायशास्त्र जाननेवाला यद्वा तर्क

ऊहापोह करनेवाला) होवे लिखनेमें चतुर तथा दिव्य अक्षर लिखनेवाला होवे परंतु जो कुछ कार्य करे उसके फल मिलते समय विघ्न होवे पुत्र सहायक होनेसेभी धनसमृद्धि परिणत होवे अर्थात् कार्यानुसारही होवे अधिक न होवे, संतान बडी तथा बहुत हों गुणोंकरके विख्यात रहे बुद्धि निर्मल हो प्रियवाणी बोले ब्राह्मणोंका पूजनेवाला होवे ॥ ५ ॥

रुगार्तो जनन्यां रुजः संभवेयू रिपौ वाक्पतौ शत्रुहन्तृत्वमेति ॥ बलादुद्धतः को रणे तस्य जेता महिष्यादिशर्मा न तन्मातुलानाम् ॥६॥

अर्थ-बृहस्पति छठे भावमें हो तो मनुष्य रोगसे पीडित हुआभी शत्रुओंके मारनेकी सामर्थ्य रक्खे अपने बलसे संग्राममें उद्धत रहे अर्थात् इसे कोई न जीत सके तथा भैंस आदि पशुओंसे सुख मिले मामाके पक्षसे न मिले यद्वा माता रोगी रहे शत्रु बहुत रहें रोगी भी रहे पर-

देशवासी होवे पराई सेवा करे कृतघ्न (निंदक) होवे मूर्खबुद्धिभी होवे ॥ ६ ॥

मतिस्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी रतिर्वै भवेद्भामिनीनामबह्वी ॥ गुरुर्वर्गकृद्यस्य जामित्रभावे सपिण्डाधिकोऽखण्डकंदर्प एव ॥ ७ ॥

अर्थ–जिसका बृहस्पति सप्तम भावमें हो उसकी बुद्धि बहुत (बडी) विचारशील चतुर होवे धनकी समृद्धिभी बहुत होवे परंच स्त्रीसंग थोडा होवे गर्वी (घमंडखोर) होवे अपने कुलके लोगोंमेंसे बलवान् होवे स्वरूपवान् (कामदेवके समान रूपवान्) होके कामातुर रहे पापरहित एवं सच्चा बोलनेवाला और देवता गुरुकी भक्तिमें तत्पर रहे ॥ ७ ॥

चिरं नो वसेत्पैतृके चैव गेहे चिरस्थायिनी तद्गृहं तस्य देहम्॥ चिरं नो भवेत्तस्य नीरोगमंगं गुरुर्मृत्युगो यस्य वैकुण्ठगन्ता ॥ ८ ॥

अर्थ–जिसका बृहस्पति अष्टम स्थानमें हो वह मनुष्य

पिताके घरमें बहुतकाल निवास न करे अर्थात् अपने पराक्रमार्जित घरमें रहा करे तथा एक घरमें बहुत काल पर्यंत स्थिर न रहे शरीरभी बहुतकाल न जीवे उसका शरीर बहुत दिनों निरोगी न रहे कभी कभी रोगभी होता रहे शरीरके अंतमें वैकुंठवास पावे. (प्र०) बुद्धिहीन खल (दुष्टमति) होवे विद्या एवं विवेक (ज्ञान) से दूषित रहे प्रतापरहित और दूसरेको ठगनेवाला होवे ॥ ८ ॥

चतुर्भूमिकं तद्गृहं तस्य भूमीपतेर्वल्लभो वल्ल-
भा भूमिदेवाः ॥ गुरौ धर्मगे बान्धवाः स्युर्वि-
नीताः सदालस्यतो धर्मवैगुण्यकारी ॥ ९ ॥

अर्थ—बृहस्पति जिसका नवम भावमें हो वह मनुष्य राजाका प्रिय होवे आलस्य वा प्रमादसे संध्यावंदनादि नित्यकर्मकाभी लोप करे और उसकेघरके चारों दिशाद्वार हों वा चौराहेपर गृह होवे भूमिकाभी अधिकारी होवे ब्राह्मणोंसे प्रेमाधिक्य होवे तथा बंधुजन सब उससे नम्र रहें

(प्र०) धर्मात्मा सत्यवादी दयावान् धनवान् इष्टबंधुजनसंयुक्त बडा प्रतापी होवे ॥ ९ ॥

ध्वजा मण्डपे मण्डलं चित्रशालं पितुः पूर्वजेभ्योऽपि तेजोधिकत्वात्॥न तुष्टो भवेच्छर्मणा पुत्रकाणां पचेत्प्रत्यहं प्रस्थसामुद्रमन्नम्॥१०॥

अर्थ–जिसका बृहस्पति दशम भावमें हो उसके कचहरी घर ध्वजा पताकाओंसे सुशोभित तथा अनेक चित्र (शिल्प रंगादिकों) से सजा रहे स्त्री पुत्रादियोंके गृहभी चित्र विचित्र होवें तेजवान् अपने पितासेभी अधिक होवे परंच पुत्रोंके सुखसे संतुष्ट न होवे अर्थात् सुतद्वेषी रहे और इसके रसोईमें १ प्रस्थ सोलह पल लवण व्यय होवे अर्थात् इतना अन्न रसोईमें लोग भोजन करें कि जिसमें १ पाथा निमक लगता हो. (प्र०) सत्कर्मी राजप्रिय सर्वमान्य सामर्थ्यवान् अधिकार देवताब्राह्मणोंका भक्त तृप्त (इच्छारहित अर्थात् संतुष्ट) होवे॥१०॥

अकुप्यं च लाभे गुरौ किन्न लभ्यं वदन्त्यष्ट

धीमन्तमन्ये मुनीन्द्राः॥ पितुर्भारभृत्स्वीगजा-
स्तस्य पंच परार्थस्तदर्थो न चेद्वैभवाय॥११॥

अर्थ-जिसका बृहस्पति ग्यारहवें भावमें हो उसको सुवर्ण चाँदी आदि अलभ्य नहीं है अर्थात् धनवान् होवे यह फल आठ मुनींद्र इंद्रादि वैयाकरणाचार्य कहते हैं अथवा उक्त मुनियोंके समान पंडित होवे पिताको पालनेवाला होवे यद्वा पिताके कारोबारको सम्भाले और सुपुत्र पांच होवें इसका धन पुत्रादियोंके काम आवे दान धर्म भोगादिमें अपने काममें न आवे अर्थात् कृपण होवे नित्य लाभ होता रहे वाहन वस्त्र भोग्य पदार्थ और धनसे पूर्ण रहे अच्छे मंदिर और अच्छी स्त्री मिले॥११॥

यशः कीदृशं सद्व्यये साभिमाने मतिः कीदृ-
शी वञ्चना चेत्परेषाम् ॥ विधिः कीदृशोर्थस्य
नाशो हि येन त्रयस्ते भवेयुर्व्यये यस्य जीवः १२

अर्थ-जिसका बृहस्पति बारहवें भावमें हो तो उसको धनादि अच्छे प्रकार व्यय करनेसेभी यह कहांसे

होवे अर्थात् अपयश मिले मति इसकी औरोंको ठग-नेवाली होवे और काम ऐसा करे कि जिससे व्यर्थ द्रव्यहानि हो जावे इहलोक परलोकमें कहींभी काम न आवे यश, मति, विधि ये तीनों इसके विरुद्ध होते हैं. (प्र०) बहुतोंका द्वेषी होवे पराये धनमें अतिलोभ रक्खे ईर्ष्या (हिंसा) करे. पापी मनुष्योंकी संगति करे शरीर मांदा रहे कृतघ्न और ठग होवे ॥ १२ ॥

इति बृहस्पतिभावफलानि।

अथ शुक्रभावफलानि।

समीचीनमङ्गं समीचीनसङ्गः समीचीनबह्व-
ङ्गनाभोगयुक्तः॥ समीचीनकर्मा समीचीन-
शर्मा समीचीन शुक्रो यदा लग्नवर्ती ॥ १ ॥

अर्थ--जिसका शुक्र षडबलयुक्त लग्नमें हो तो उसके प्रत्येक अंग सुंदर होते हैं सत्संगी रहता है सुंदर अंग प्रत्यंग सौंदर्य चातुर्यादि जिनकी ऐसी स्त्रियोंका भोग करता है कार्यभी यज्ञदानादि अच्छे अच्छे करता है

सुखभी अच्छा भोगता है विषयभोगादि समस्त उत्तम प्रकारसे भोगता है शरीर सुरूप हो शास्त्राभ्यासी विख्यात होवे प्रिय वाणी बोले समस्त कला (इल्म) जाननेवाला नम्र होवे शत्रु उसके न होवें ॥ १ ॥

मुखं चारुभाषं मनीषापि चार्वी मुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य॥कुटुम्बास्थितः पूर्वदेवस्य पूज्यः कुटुम्बेन किं चारुचार्वङ्गिकामः२

अर्थ–जिसका शुक्र धनभावमें हो उसका मुख सुरूपवान् होता है बुद्धि चतुर (धर्मिष्ठा) होती है वाणी रमणीय बोलता है अनेक प्रकारके रमणीय वस्त्र पहनता है कुटुंबभी उसका सरल (सुलक्षण) होकर इसे सुख देवे सुंदर रमणियोंकी अभिलाषा रक्खे.(प्र०) धन अनेक प्रकारके जमा होवे सज्जन संगति करे सोना, मोती, मणि वस्त्रादि लाभ होवे नीरोग रहे चेष्टा अच्छी होवे ॥ २ ॥

रतिःस्त्रीजने तस्य नो बन्धुनाशो गुरुर्यस्य दुश्चिक्यगो दानवानाम् ॥ न पूर्णो भवेत्पुत्रसौ-

ल्येऽपि सेनापतिः कातरोदानसंग्रामकाले ॥३॥

अर्थ–शुक्र तीसरे भावमें हो तो स्त्रियोंके साथ प्रीति न रहे बंधुनाशभी न होवे अर्थात् भाइयोंका सुख मिले पुत्रके सुख हुएमेंभी संतानसे तृष्णा पूर्ण न होवे सेनापति होवे परंतु दान देनेमें तथा संग्राममें कातर होवे (प्र०) शत्रुभी हाथ जोडे सुपुत्र उत्पन्न होवे उदार एवं तेजवान् दयावान् सुंदररूप नम्रतायुक्त होवे ॥ ३ ॥

महित्वेऽधिको यस्य तुर्योऽसुरेज्यो जनैः किं जनैश्चापरै रुष्टतुष्टैः ॥ कियत्पोषयेज्जन्मतः संजनन्या अधीनार्पितोपायनैरेव पूर्णः ॥ ४ ॥

अर्थ–जिसका शुक्र लग्नसे चतुर्थ भावमें हो उसका चित्त पूजा तथा उत्सवकृत्यमें बहुत लगे और समस्त स्त्री वा पुरुष इससे प्रसन्न वा अप्रसन्न जैसे हो किंतु इसकी तो समक्षमें पूजा (आदर) ही करें तथा अपने मनुष्योंका दिये उपायन (भेंट) से परिपूर्ण मनोरथ रहे और जन्मसेही मातासे श्रेय पावे माताका पालनभी करे.

(प्र०) समस्त सुख मिले रोग नष्ट हो सज्जनसंगतिमें प्रसन्न रहे गुरुदेवताका भक्त होवे ॥ ४ ॥

सपुत्रेऽपि किं यस्य शुक्रो न पुत्रे प्रयासेन किं यत्नसंपादितार्थः ॥ व्युदर्कं विना मन्त्रमिष्टा-सनाभ्यामधीतेन किं चेत्कवित्वेन शक्तिः ॥५॥

अर्थ--जिसका शुक्र पंचम भावमें हो उसका पुत्र होवेभी तो पुत्रजन्मका जो फल है वह न होवे धनसं-ग्रह करनेमें परिश्रम नहींभी करे तोभी ऐश्वर्यवान्ही होवे मनके संतोष करनेवाले भोग पदार्थ मिलते रहें मंत्र जप इष्ट देवताराधन विनाभी कविता (काव्य-रचना) सामर्थ्य होवे अर्थात् पंचम शुक्रवाला कवि और धनवान् होवे उत्तम भोग पदार्थ भोगनेवाला होवे. (प्र०) पुत्र विलक्षण (समस्त गुणवान्) चतुर प्रतापी होवे विद्यावान् चतुरभी होवे ॥ ५ ॥

सदा दानवेज्ये सुधासिक्तशत्रुर्व्ययः शत्रुगे

चोत्तमौ तौ भवेताम् ॥ विपद्येत संपादितं
चापि कृत्यं तपेन्मन्त्रतः पूज्यसौख्यं न धत्ते६॥

अर्थ-शुक्र छठे भावमें हो तो मनुष्य अमृतसेवित देवतोंके समान शत्रु संग्राममें दृढ (अनिवारित) होवे धन नाशभी उत्तम कार्यमें करे जास्त शुभ क्रिया करके श्रेष्ठ रहे किंतु जो कार्य करे वह सफल न होवे कुमंत्र (दुष्टप्रयोग) बुद्धिसे संताप पावे गुरुजन आदि पूज्यजनोंसे सुख पावे अथवा गुरुजन इससे सुख न पावे (प्र०) कुरूप संतानहीन हीनबुद्धि अल्पायु छोटी समझ पवित्रतारहित रहे ॥ ६ ॥

कलत्रे कलत्रात्सुखं नो कलत्रात्कलत्रं तु शुक्रे
भवेद्रत्नगर्भम् ॥ विलासाधिको गण्यते च
प्रवासी प्रयासाल्पकः केन मुह्यन्ति तस्मात्॥७॥

अर्थ-जिसका शुक्र सप्तम भावमें हो उसके स्त्रीसुख तो होवे किंत (कलत्रं श्रोणिभार्ययोः) कटि स्थानसे

पीडित रहे अर्थात् कमरमें रोग रहा करे उसकी स्त्री रत्नगर्भा (सत्पुत्र पैदा करनेवाली) होवे तथा अति-कामी एवं नित्य प्रवासी रहे स्वल्पोद्यमी (आलसी) होवे श्रम विशेष न करे और चतुर ऐसा होवे कि जिसके चातुर्यतासे सभी मोहित रहें. (प्र०) रूपवान् गुणोंसे विख्यात होवे सुलक्षण स्त्री मिले सच्च बोले दयावान् होवे सज्जनोंके बीच प्रशंसनीय होवे ॥ ७ ॥

जनः क्षुद्रवादी चिरं चारु जीवेच्चतुष्पात्सुखं दैत्यपूज्यो ददाति ॥ जनुष्यष्टमे कष्टसाध्यो जयार्थः पुनर्वर्द्धते दीयमानं धनर्णम् ॥ ८ ॥

अर्थ—जिसके जन्मसमयमें शुक्र अष्टम भावमें हो उसको पशु (गौ घोडा आदियों) का सुख देवे तथा वह मनुष्य क्षुद्र (चुगलखोर) होवे सुखपूर्वक बहुत काल पर्यंत जीता रहता है ऋण लेनेसे पुनः देकरकेभी वारंवार ऋणीही रहता है. (प्र०) अल्पसत्व हीनपराक्रमी विदेश

वासी दुर्व्यसनी अल्पायु बंधुरहित शत्रुसहित और देवता गुरुके विषयमें श्रद्धा न रक्खे ॥ ८ ॥

भृगौ त्रित्रिकोणे पुरे केन पौराः कुसीदेन ये वृद्धिमस्मै ददीरन्॥गृहे ज्ञायते तस्य धर्मध्वजादेः सहोत्थादिसौख्यं शरीरे सुखं च ॥ ९ ॥

अर्थ—जिसके नवम भावमें शुक्र हो उसको नगरनिवासी सभी मनुष्य वृद्धि (व्याज) देते हैं कोईभी इसके ऋणसे खाली न रहता है तथा उसका घर धर्मध्वजा सदावर्त आदि दानोंसे सभीके पैछानेमें आता है भाई तथा नौकर दासोंसे सुख पाता है अतिऐश्वर्यवान् बहुत लाभवान् अभिमानी विख्यातकीर्ति होवे शत्रुभी हाथ बांध खडा रहे ॥ ९ ॥

भृगुः कर्मगो गोत्रवीर्यं रुणद्धि क्षयार्थं भ्रमः किन्न आत्मीय एव॥तुलामानतो हाटकं विप्रवृत्त्या जनाडम्बरैः प्रत्यहं वा विवादात्॥१०॥

अर्थ--शुक्र दशम भावमें हो तो इतनी संतान होती है कि उनके इकट्ठे देखनेमें यह मेरा पुत्र है वा किसी

औरका ऐसा भ्रम हो जावे अर्थात् बहुपुत्र संतानरूपी वन जैसा हो जावे धनहानिके विषयमें भ्रम रहे अर्थात् धनक्षय न होने देवे प्रत्युत ब्रह्मवृत्तिसे अथवा विवादकर्मसे नित्य-सुवर्णतुला (सौ १ल सुवर्ण) वा इससेभी अधिक विशे-षतः लोगोंको आडंबर दिखानेके लिये अपने पास रक्खे जिस वृत्तिसे पिताका आजीवन भया उससे अतिरिक्त अधिक कर्मोंसे धनवान् तथा ऐश्वर्यवान् होवे धन धर्म युक्त सुशील पुत्रवान् सुरूप सर्वसिद्धिवाला होवे ॥ १० ॥

भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात्सुरूपं महीपं च कुर्याच्च सम्यक् ॥ लसत्कीर्तिस-त्यानुरागं गुणाढ्यं महाभोगमैश्वर्ययुक्तं सुशीलम् ॥ ११ ॥

अर्थ–जिसका शुक्र ग्यारहवें भावमें हो तो गुणवान् (सुगुणशाली) अच्छे स्वभावयुक्त देदीप्यमान कीर्ति-वाला सच्च बोलनेवाला बडा ऐश्वर्यवान् स्वरूपवान्

अनेक भोग भोगनेवाला सर्वसामर्थ्ययुक्त राजा वा राज-
तुल्य करता है जैसा अधिक बली शुक्र हो वैसेही उक्त
फलोंमेंसे अधिक फल देता है (प्र०) दीर्घायु उदार
राजमान्य प्रसिद्ध हकूमती होवे और कन्या बहुत
होवें ॥ ११ ॥

कदा व्येति वित्तं विलीयेत पित्तं सितो द्वा-
दशे केलिसत्कर्मशर्मा ॥ गुणानां च की-
र्तिक्षयं मित्रवैरं जनानां विरोधं सदाऽसौ
करोति ॥ १२ ॥

अर्थ—शुक्र बारहवें भावमें हो तो क्रीडा (कौतु-
कादि) यद्वा धर्मकर्मादिसे धनव्ययसे सौख्य माने गुण
और कीर्ति क्षय होवे सर्व मनुष्योंसे विरोध करे मित्रोंसे
वैरभाव रक्खे धन कभी कभी पावे तौभी व्ययाधिक्यसे
धननाश होताही रहे और शरीर पित्त धातु क्षीण होकर
कफरोगकी वृद्धि होवे.(प्र०)धन व्यर्थभी खर्च करे परा-
क्रम न करसके शरीरमें बलभी कम होवे धनरहित

(दारिद्री) रहे निर्दयी क्रूरस्वभाव होवे ॥ १२ ॥

इति शुक्रभावफलानि ।

अथ शनिभावफलानि ।

धने नातिपूर्णोऽतितृष्णाविषादी तनुस्थेऽ-
र्कजे स्थूलदृष्टिर्नरः स्यात् ॥ विषं दृष्टिज-
न्त्वादिकृद्व्याधिबाधाः स्वयं पीडितो मत्स-
रावेश एव ॥ १ ॥

अर्थ--शनि लग्नमें हो तो वह मनुष्य धनकी अति तृष्णा रक्खे धन पायेमेंभी इच्छा पूर्ण न होवे संतोष न पावे कभीं प्रसन्न न रहे सूक्ष्मविचार न करे बारीकी बातें न शोचे शत्रु इसके देखनेहीसे नष्ट होवें मानसी व्यथा नित्य लगी रहे कदाचित् नेत्ररोगी होवे चित्तमें मत्सर(अन्यशुभ द्वेष) रहे दूसरेकी भलाई देखके जल मरे, (प्र०) मंदमति नीचके आश्रयमें रहनेवाला होवे पाप चर्चामें तत्पर रहे भयंकर आकृति होवे रोगी रहे झूठ बोले दुर्बुद्धि होवे ॥ १ ॥

सुखापेक्षया वर्जितोऽसौ कुटुम्बात्कुटुम्बे शनौ वस्तु किं किन्न भुंक्ते ॥ समं वक्ति मित्रेण तिक्तं वचोऽपि प्रसक्तिं विना लोहकं को लभेत ॥२॥

अर्थ–जिसका शनि दूसरे भावमें हो वह मनुष्य सुखके वास्ते कुटुंब जोडे परंतु सुख न होवे प्रत्युत कुटुं-बके त्यागनेसे परदेश वास करे भोगपदार्थ तौ सर्व प्रका-रके भोगे और बनाये हुए लोहेके औजार आदि वा अष्टधातु लोहा आदि विना खुसामदही बहुत पावे मित्रके साथ कडवी वाणी (जो सहारी न जावे) बोलता है धनरहित अनेक व्यसनोंसे युक्त कृश कुरूप और बहुत शत्रुवाला होवे ॥ २ ॥

तृतीये शनौ शीतलं नैव चित्तं जनादुद्यमा-ज्जायते युक्तभाषी ॥ अविघ्नं भवेत् कर्हि-चिन्नैव भाग्यं दृढाशः सुखी दुर्मुखः सत्कृ-तोऽपि ॥ ३ ॥

अर्थ–जिसका शनि तीसरे भावमें हो उसका मन

सहज (भाई) आदियोंसे तथा पराक्रम करनेसेभी शांत न हो ऐश्वर्य और लाभ निर्विघ्नपूर्वक न होवे होवे तो सही किंच इनमें विघ्न बहुत होते रहें थोडा बोलनेवाला होवे तृष्णा उसकी चलायमान न होवे नित्य बनीही रहे इस कारण सुखी कभी न रहे जो इसका सत्कार (आदर-भाव)भी किया जाय तौभी दुष्टता न छोडे दुष्ट वाणीही मुखसे निकाले. (प्र०) दीर्घायु होवे संपूर्ण विद्या जाने प्रसन्न रहे सर्व सामर्थ्य होवे धनवान् निरोगी और सुंदर शरीरवाला होवे ॥ ३ ॥

चतुर्थे शनौ पैतृकं याति दूरं धनं मन्दिरं ब-
न्धुवर्गोपवादः ॥ पितुश्चापि मातुश्च संता-
पकारी गृहे वाहने हानपो वातरोगी॥४॥

अर्थ-जिसका शनि चौथे भावमें हो उसको पिताका धन गृहादिक न मिले मिलेभी तो उनसे दूर रहे बिरादरीसे कलंक (निंदा) पावे घरके तथा वाहनके विषयमें हानि होवे अपने माता पिताको संताप (क्लेश) करे वातरोगी

होवे, (प्र०) सुखरहित परदेशवासी पराया सेवक हीन दीन तथा बंधुरहित रहे ॥ ४ ॥

शनौ पञ्चमे च प्रजाहेतुदुःखी विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्न शुद्धा ॥ रतिर्दैवते शब्दशास्त्रे न तद्वत्कलिर्मित्रतो मन्त्रतः क्रोधपीडा ॥५॥

अर्थ–जिसका शनि पंचम भावमें हो वह संतानके निमित्त नित्य दुःखी रहता है ऐश्वर्यभी कभी कभी घटता बढता रहे बुद्धि शुद्ध निष्कपट न होवे होवे तो कुटिलता करता रहे देवतामें तथा धर्मशास्त्र (वेदस्मृति) आदियोंमें प्रेम एवं विश्वास जैसा चाहिये वैसा न रक्खे मित्रके साथ कलह करता रहे अपनी बुद्धिके चूकसे कुक्षि (कूख) में रोग रहे और मंत्र विषयमें सिद्धि कम होवे, (प्र०) मित्र दुष्ट होवे यहभी मित्रके साथ दुष्टता करे धनरहित प्रतापरहित सुखवर्जित होवे ॥५॥

अरेर्भूपतेश्चौरतो भीतयः किं यदीनस्य पुत्रो भवेद्यस्य शत्रौ ॥ न युद्धे भवेत्सन्मुखे

तस्य योद्धा महिष्यादिके मातुलानां विनाशः ॥ ६ ॥

अर्थ-जिसका शनि छठे भावमें हो उसको राजा तथा चोरसे भय न होवे बलवान् रहे संग्राममें योद्धा (भट) तथा विवादमें प्रतिवादी (लडनेवाला) इसके सन्मुख न ठहर सके इतना बलवान् होवे कि संग्राममें किसीसे न हारे गौ महिषी आदि पशुओंसे सुख फायदा मिले और मामाकी हानि होवे. (प्र) शत्रु न होवे जो कोई शत्रुता इससे करेभी तो आपही नष्ट हो जावे राजासे अपकार्य सिद्ध होवे भोजन वस्त्रादि अच्छे मिले अपने धर्ममें तत्पर रहे सद्बुद्धि होवे॥ ६ ॥

सुदाराश्च मित्रं चिरं चारु वित्तं शनौ द्यूनगे दम्पती रोगयुक्तौ॥ अनुत्साहसंतप्तकृद्दीन-चेताःकुतो वीर्यवान् विह्वलो लोलुपःस्यात् ७॥

अर्थ-शनि सप्तम भावमें हो तो स्त्री सुंदर मिले मित्र हितकारी न होवे धन न्यायमें न आवे बहुत कालपर्यंत

इतने वस्तुका सुख न मिले दोनों स्त्री पुरुष रोगयुक्त रहें निरंतर अनुत्साही आलसी होवें मन मलीन विह्वल रहे लोलुप (अतिलोभी) गर्हित वस्तुपरभी बडा लोभ करनेवाला होवे बलवान् न होवे दुष्ट स्त्रीमें आसक्त रहे बुद्धि चतुर होवे पापमें मति रक्खे उद्धत होवे सज्जनसंगति तथा शास्त्रज्ञानसे रहित रहे ॥ ७ ॥

वियोगो जनानां त्वनौपाधिकानां विनाशो धनानां सकोपस्य न स्यात् ॥ शनौ रन्ध्रगे व्याधितं क्षुद्रदर्शी तदग्रे जनः कैतवं किं करोतु ॥ ८ ॥

अर्थ-शनि अष्टम भावमें हो तो उपाधिरहित सत्संगी ज्ञानी मनुष्योंका वियोग होवे अर्थात् सत्संग न मिले दुष्ट संगतिमें रहे अपने मनुष्योंका वियोग पावे अष्टम शनिवाला ऐसा कौन मनुष्य है जिसके धनोंका नाश न होवे तैसा रोगीभी रहे पराये दोष (छिद्रोंको) ढूंढता रहे और उसके आगे कोई धूर्तपन (ठगपनी) क्या करेगा अर्थात् महाधूर्त (ठग) आपही होवे. (प्र०) मंदबुद्धि

प्रभावरहित रुधिरविकारसे शरीर पीडित बुद्धिहीन होवे और परायेमें भर्त्सना पावे ॥ ८ ॥

मतिस्तस्य तिक्ता न तिक्तं तु शीलं रतिर्योग-
शास्त्रे गुणो राजसः स्यात्॥सुहृद्वर्गतो दुःखितो
दीनबुद्ध्या शनिर्धर्मगः कर्मकृत्संन्यसेद्वा॥ ९ ॥

अर्थ–जिसका शनि नवम भावमें हो तो उसकी बुद्धि विषयवासनासे विरक्त रहे परंच शील (स्वभावाचरण) उसका कटुक (बुरा) न होवे योगशास्त्रमें अभ्यास प्रेम रहे रजोगुण विशेष रहे मित्र बांधवोंसे दुःखित रहे अर्थात् दयावान् होनसे औरोंके दुःख देख खिन्न रहे सभीका शुभ चाहे अथवा यती (संन्यासी) ही हो जावे. (प्र०) धर्म कर्म त्यागे सभी मनुष्योंसे विरुद्ध रहे ईर्षा (मत्सर) रक्खे बुद्धिहीन अतिक्रोधी सुखरहित होवे ॥ ९ ॥

अजा तस्य माता पिता बाहुरेव वृथा सर्वतो दुष्टक-
र्माधिपत्यात् ॥ शनैरेधते कर्मगः शर्म मन्दो जयो
विग्रहे जीविकानां तु यस्य ॥ १० ॥

अर्थ-जिसका शनि दशम स्थानमें हो वह माताके अभाव वा क्लेशसे बकरी आदि पशुके दूधसे पले तथा बाल अवस्थाहीमें पिताका अभाव होनेसे केवल अपनेही बाहु-बलसे धन कमावे कुछ अधिकार मिलनेसे निष्प्रयोजनभी सर्व जनोंको ताडनादि (मारपीट) करके क्रमसे लडनेमें जीत पावे तदनंतर सुखभी पावे आजीवन वृत्तिभी स्वल्प-तर होवे. (प्र०) सत्कर्मी होवे स्त्री सुलक्षणी होवे चित्त स्थिर रहे नम्र तथा राजपूज्य प्रतापी होवे ॥ १० ॥

शनौ व्योमगे विन्दते किंच माता सुखं शैशवं दृश्यते किंतु पित्रा ॥ निधिः स्थापितो व्यापिता वा कृषिश्च प्रणश्येदध्रुवं दृश्यते दैवतो वा ॥ ११ ॥

अर्थ-दशम शनिका फल प्रकारांतरसेभी कहते हैं कि दशम शनिवाला क्या माताका सुख पाता है. क्या उसका पिता उसकी बाललीला देखता है, कभी नहीं और पिताकी धरी धराई निधि(उत्तम धन रत्नादि) तथा कृषि (खेती)

आदि समस्त स्वचक्र परचक्रागम जलाग्न्यादि भयोंसे नष्ट होते हैं ॥ ११ ॥

स्थिरं वित्तमायुःस्थिरं मानसं च स्थिरा नैव रोगादयो न स्थिराणि ॥ अपत्यानि शूरः शता- देक एव प्रपंचाधिको लाभगे भानुपुत्रे ॥ १२ ॥

अर्थ-शनि ग्यारहवें भावमें हो तो धन स्थिर रहे आयु बहुत हो बुद्धिभी स्थिर होवे शरीरके रोगादि स्थिर न रहें, निरोगी रहे संतान स्थिर न रहे अथात् संततिका शोक देखे सो मनुष्योंमेंसे छूटा हुआ हो प्रपंची (जाली) होवे रागद्वेषादियोंमें निपुण होवे शूर होवे. (१०)अनेक प्रकारके लाभ विना लोभ कियेभी होते रहें शास्त्रमें अनुराग रक्खे शत्रु जीते रहे सज्जनोंका प्रशंसनीय होवे ॥ १२॥

व्ययस्थे यदा सूर्यसूनौ नरः स्यादशूरोऽथवा निस्त्रपो मन्दनेत्रः ॥ प्रसन्नो बहिर्नो गृहे लग्नपश्च व्ययस्थो रिपुध्वंसकृद्यज्ञभोक्ता ॥ १३ ॥

अर्थ-जो शनि बारहवें भावमें हो तो वह मनुष्य

कातर (कायर) होवे भययुक्त रहे निर्लज्ज (बेहया) भी होवे नेत्रोंकी दृष्टि कम रहे परदेशमें प्रसन्न रहे घरमें सुख न रहे यदि वह शनि लग्नेशभी होवे तो शत्रु नाश करे तथा यश द्रव्यसे समृद्धि एवं ऐश्वर्य पावे केशहीन खल्वाट होवे बुरे कामोंमें धनव्यय करे पापमें तत्पर रहे कुमित्र मिले दीन (कंगला) रहे शरीर पीडित रहे सज्जनोंसे रहित और कलही होवे ॥ १३ ॥

इति शनिभावफलानि ।

अथ राहुभावफलानि ।

स्ववाक्ये समर्थः परेषां प्रतापात्प्रभावात्स-
माच्छादयेत्स्वान् परार्थान् ॥ तमो यस्य
लग्ने सभग्नारिवीर्यः कलत्रे धृतिं भूरिदाशेऽपि
यायात् ॥ १ ॥

अर्थ--जिसका राहु लग्नमें हो वह शत्रुओंको सर्वदा जीत रक्खे और अपने वचनके प्रतिपालन करनेको दूसरेके प्रतापसे समर्थ होवे न कि अपने तेजसे दूसरेके प्रभा-

वसे अपने तथा पराये कार्योंका साधन करे और बहुत स्त्रियोंके होतेही संतोष न रक्खे अति कामीभी होकर बहुत स्त्रियोंका धर्षण करे. (प्र०) दुष्टस्वभाव (खल) धूर्त्त तथा सर्वसाधारणोंको ठगनेवाला होवे शिरमें व्यथा (रोग) रहे क्रीडारसमें मग्न रहे रोगी होवे विवादमें जय पावे ॥ १ ॥

कुटुम्बे तमो नष्टभूतं कुटुम्बं मृषाभाषिता निर्भयो वित्तपालः॥स्ववर्गप्रणाशो भयं शस्त्र-तश्चेदवश्यं खलेभ्यो लभेत्पारवश्यम् ॥ २ ॥

अर्थ–जिसका राहु दूसरे भावमें हो उसका कुटुंब नष्टके बराबर रहे अर्थात् उसके स्वजन दुष्ट होकर पराधीन वा बिकें हुएके तुल्य जैसे रहे शस्त्रसे भय होवे झूंठ बोले निर्भय रहे किसीसे न डरे धनकी इच्छा करे अर्थात् कृपण होवे बंधुजन नष्ट होवें मुखर (बहुत वाचाल) धूर्त्त कलही धननाश करके दरिद्री रहे और सर्वदा भ्रमणमें तत्पर रहे २

न नागोऽथ सिंहो भुजो विक्रमेण प्रयातीह

सिंहीसुते तत्समत्वम् ॥ तृतीये जगत्सोदरत्वं समेति प्रयातोऽपि भाग्यं कुतो यत्नहेतुः ॥३॥

अर्थ–जिसका राहु तीसरे भावमें हो तो उसका बाहु बल बहुत बडा होवे परंतु हाथी सिंहके समान तो न होवे सारे संसार उसके भाइयोंके समान रहे तथा भाग्य(ऐश्वर्य) पायेमेंभी बडे यत्नसे लाभादि होवें (प्र०) शत्रु इससे हारते रहें संसारमें यश बढे धनवान् होवे गया धनभी पावे हासविलासादि सुखमें रहे भाईकी हानि पशुहानि दरिद्रता होवे ॥ ३ ॥

चतुर्थे कथं भ्रातृनैरुज्यदेहो हृदि ज्वालया शीतलं किं बहिः स्यात्॥स चेदन्यथा मेषगः कर्कगो वा बुधर्क्षंसुरो भूपतेर्बन्धुरेव ॥ ४॥

अर्थ–राहु चौथे भावमें हो तो माताका देह निरोगी न रह आपभी रोगयुक्त रहे हृदयमें रोगादि चिंताकी ज्वाला लगी रहे कभी शरीर शीतल न होवे यदि चौथा राहु मेष १ कर्क ४ कन्या ६ मिथुन ३ राशियोंमेंसे

किसीमें हो तो समस्त शुभफल ही करे. (प्र०) सुखहानि अपने मित्र पुत्रादिभी दुःख देवे चित्तमें भ्रम रहे ॥ ४ ॥

सुते तत्सुतोत्पत्तिकृत्सिंहिकायाः सुतो भामि-
नीचिन्तया चित्ततापः ॥ सति क्रोडरोगे कि-
माहारहेतुःप्रपंचेन किं पापकादृष्टवर्ज्यम् ॥ ५ ॥

अर्थ—जिसका राहु पंचम भावमें हो तो पुत्रकी उत्पत्ति करे स्त्री क्रोधी (कर्कशा) होनेसे चित्त संतप्त रहे कुक्षीमें रोग रहे पेटमें अग्नि मंद रहे इससे औषधी पथ्य आदिकोंकि आदत रहे अकस्मात् दैवयोगसे धनादि न मिले प्रयास (प्रयत्न) करनेसेभी लाभादि अल्पही होवें. (प्र०) बुद्धिमें भ्रम रहे संतान हानि होवे विद्या थोडी आवे भाइयोंको क्लेश होवे शत्रुकी भय रहे ॥५॥

बलं बुद्धिवीर्यं धनं तद्वशेन स्थितो वैरिभावेऽपि
येषां जनानाम् ॥ रिपूणामरण्यं दहेदेव राहुः
स्थिरं मानसं तत्तुला नो पृथिव्याम् ॥ ६ ॥

अर्थ—जिसका राहु छठे भावमें हो उसके शत्रुरूपी

वन भस्म हो जावे तथा इसीके वशसे शरीरमें बल बुद्धिकी चातुर्यता बहुत होवे धनभी बहुत होवे परंतु मन स्थिर न रहे इतने फलोंमें उसके तुल्यता संसारमें कोई न कर सके. (प्र०) शत्रुक्षय होवे मित्रोंका संगम होता रहे पशुहानि होवे कमरमें पीडा रहे म्लेच्छ जनोंकी संगति रहे बलवान् होवे ॥ ६ ॥

विनाशं लभेयुर्द्युने तद्युवत्यो रुजा धातुपाकादिना चन्द्रमर्दी ॥ कटाहे यथालोडयेज्जातवेदा वियोगापवादाः शमं न प्रयान्ति ॥ ७ ॥

अर्थ–राहु सप्तम भावमें हो तो वह मनुष्य आगके ऊपर चढायी कढायी जैसे संतप्त रहे यद्वा उसकी स्त्रियां इतने रोगी रहें कि भट्ठीके ऊपर धातु (रसादि) तथा पाकादि कडाहीमें घुटतेही रहें तथापि स्त्रीहानि होवे और बंधुजनोंका वियोग (बिछुडना) होवे लोकापवादों (झूंठे फलों) से कभी शांति न पावे (प्र०) स्त्रियोंसे विरोध रहे प्राणांत कष्ट स्त्रीसंसर्गसे होवे स्त्री उसकी प्रचंड झगडालू रोगी क्रोधी होवे ॥ ७ ॥

नृपैः पण्डितैर्वंदितो निन्दितः स्वैः सकृद्भाग्य-
लाभो सकृद्भ्रंश एव ॥ धनं जातकं तं जनाश्च
त्यजन्ति श्रमग्रान्थिकृद्रन्ध्रगो ग्रघ्नशत्रुः ॥ ८ ॥

अर्थ–राहु अष्टम भावमें हो तो अतिश्रम करनेसे पेटमें वातरोग (वायुगोला) नल प्लीहा आदि होवें अपने मनुष्य इसे त्याग देवें पिताका धनभी न मिले राजा तथा पंडित इसकी वंदना सेवा करें अपने मनुष्य निंदा करें और कभी ऐश्वर्य घट बढ जाया करे नित्य एकसा न रहे (प्र०) गुप्त रोगसे पीडा रहे प्रमेह सुजाक आदि रोग रहें वृषण (अंडकोश) बढें धनहानि होवे ॥ ८ ॥

मनीषी कृतं न त्यजेद्वन्धुवर्गं सदा पालयेत्पूजि-
तः स्याद्गुणैः स्वैः ॥ सभाद्योतको यस्य चेत्रि-
त्रिकोणे तमः कौतुकी देवतीर्थे दयालुः ॥ ९ ॥

अर्थ–जिसका राहु नवम भावमें हो वह मनुष्य बुद्धि-मान् तथा अपने शुभ गुणोंसे पूजित (मान्य) दयावान् होता है देवता एवं तीर्थमें प्रेमपूर्वक प्रसन्न रहे सभामें

अपने गुण तथा चातुर्यसे सभाकोभी प्रकाशित करे और कृतज्ञ (उपकारी) का आसान गुण माने सर्वदा बंधु-वर्गका पालन करे. (प्र०) ऐश्वर्य (भाग्य) अल्प होवे भाइयोंसे विरोध रहे दरिद्री होवे अनेक प्रकार पीडा रहे धर्म तथा धननाश होवे सुख न मिले पितासे विरोध रहे ॥ ९ ॥

सदा म्लेच्छसंसर्गतोऽतीव गर्वं लभेन्मानिनी-कामिनीभोगमुच्चैः। जनैर्व्याकुलोऽसौ सुखं नाधि-शेते मदार्थव्ययी क्रूरकर्मा खगेऽगौ ॥ १० ॥

अर्थ–जिसका राहु दशम भावमें हो तो वह मनुष्य उन्माद (प्रमाद) से धन व्यय करे क्रूर (दुष्ट) कर्म करे इसीसे लोगोंसे व्याकुल रहे सुखसे नींदभर न सोवे म्लेच्छ चांडालोंका संसर्ग (सोहबत) रक्खे अतिउत्तमा यौवनगर्विता स्त्रीसे संभोगसुख पावे. (प्र०) संपूर्ण साख्य मिले राजसन्मानसे सकल शुभफल मिले और पिताका सुख तो कदाचित्भी न मिले ॥ १० ॥

सदा म्लेच्छतोऽर्थं लभेत्साभिमानश्चरेत्किकरेण

व्रजेत् किं विदेशम् ॥ परार्थाननर्थी हरेद्धूर्त-
बन्धुः सुतोत्पत्तिसौख्यं तमो लाभगश्चेत्॥११॥

अर्थ–राहु ग्यारहवें भावमें हो तो उस मनुष्यको पुत्रोत्पन्न होनेका सुख बहुधा होवे म्लेच्छ (चांडाल आदियोंसे धन पावे गर्वी (घमंडखोर) होवे विना भृत्य (खिदमलगार) के कहींभी न जावे विदेश क्यों जावे अर्थात् घर बैठेही सब कुछ पावे इसके भाई मित्र धूर्त होवें पिशुनता (ठगपनी) से भी कार्य अनर्थके करे परायी वस्तुभी हरण करे अथवा इसकी दुष्टताके भयसे लोग आपही अपनी वस्तु इसे दे देवें. (प्र०) समस्त धनलाभ होवे सुख मिले राजा वा राजपुरुषसे मान मिले वस्त्र सुवर्ण चतुष्पदसे सुख मिले सर्वत्र जय होवे किंतु आलसीभी रहे ॥ ११ ॥

तमो द्वादशे दीनतां पार्श्वशूलं प्रयत्ने कृतेऽन-
र्थतामातनोति॥ खलैर्मित्रतां साधुलोके रिपुत्वं
विरामे मनोवाञ्छितार्थस्य सिद्धिम् ॥ १२ ॥

अर्थ—बारहवें भावका राहु दरिद्रता तथा बगल (पार्श्व) में शूलादि वातपीडा करता है खल (दुष्ट) जनोंसे मित्रता साधु सज्जनों से शत्रुता (वैर) करता है यत्नसे कुछ कार्य कियेमेंभी उलटे कार्यहानि होवे तथापि मनसे चिंतित कार्यके परिणाम (आखिर) में सिद्धि होवे. (म०) नेत्र रोग रहे पैरमें जखम होवे प्रपंची तथा वाचाल चतुर होवे दुष्टजनोंसे प्रेम रहे ॥ १२ ॥

इति राहुभावफलानि ।

अथ केतुभावफलानि ।

तनुस्थः शिखी बान्धवक्लेशकर्ता तथा दुर्जनेभ्यो भयं व्याकुलत्वम् ॥ कलत्रादि चिन्ता सदोद्वेग-ता च शरीरे व्यथा नैकधा मारुतौ स्यात्॥ १॥

अर्थ—जिसका जन्ममें केतु लग्नका हो तो भाइयोंका क्लेश करे दुर्जन (दुष्ट) मनुष्योंसे भय पावे व्याकुलता रहे स्त्रीपुत्रादिकोंकी चिंता रहे मनमें उद्वेग रहे चित्त स्थिर न रहे शरीरमें वायुरोगकी व्यथा अनेक प्रकारकी रहे॥

धने केतुरव्यग्रता किं नरेशाद्धने धान्यनाशो मुखे रोगकृच्च॥ कुटुम्बाद्विरोधो वचः सत्कृतं वा भयेत्स्वे गृहे सौम्यगेहेऽतिसौख्यम् ॥ २॥

अर्थ-केतु दूसरे भावमें हो तो धनके विषयमें राजपक्षसे व्यग्रता (धोखा) रहे अन्नका नाश अर्थात् अन्नकी नित्य चिंता रहे अथवा जिस स्थानका आश्रय रक्खे उसकी हानि होवे सुखमें रोग रहे कुटुंब तथा मित्रोंके साथ विरोध रहे सत्कारयुक्त वचनभी उसके मुखसे न निकले परंतु यदि केतु अपनी राशि (मेष) का वा मिथुन कन्याका होवे तो संपूर्ण शुभफल होवे ॥ २ ॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं विवादं धनं भोगमैश्वर्यतेजोऽधिकं च ॥ सुहृद्वर्गनाशं सदा बाहुपीडा भयोद्वेगचिन्ताकुलत्वं विधत्ते ॥ ३ ॥

अर्थ-केतु तीसरे भावमें हो तो धन, विषय, ऐश्वर्य तेज अधिक होवे शत्रु नाश होवे तथापि वारंवार विवाद (कलह) होवे मित्रपक्षी हानि होवे बाहु (बाँह) में

पीडा रहे भय (डर) उद्वेग घबराहट और चिंता (फिकर) नित्य लगे रहें ॥ ३ ॥

चतुर्थे न मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पैतृकं नाशमेति ॥ शिखी बन्धुवर्गात्सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नो वसेत्स्वे गृहे व्यग्रता चेत् ॥४॥

अर्थ--केतु चौथे भावमें हो तो माताका सुख न मिले तथा मित्रोंसेभी सुख न मिले पिताके कमाये धनादि न मिले अपने घरमें बहुत कालपर्यंत न रहे रहेभी तो चित्त प्रसन्न न रहे बहुधा परदेशमें रहा करे यदि अपने उच्च (धन) राशि अपने राशि (मीन) का हो तो बंधुवर्गादिसे सुख मिले ॥ ४ ॥

यदा पञ्चमे राहुपुच्छं प्रयाति तदा सोदरे घातवातादिकष्टम् ॥ स्वबुद्धिर्व्यथा संततः स्वल्पपुत्रः स दासो भवेद्वीर्ययुक्तो नरोऽपि ॥ ५ ॥

अर्थ–केतु पंचम भावमें हो तो भाइयोंको शस्त्रादिसे घात तथा वायुरोग आदिसे कष्ट होवे अपनीही बुद्धिके

गलतीसे शरीरमें क्लेश होवे संतान अल्प (थोडी) होवे और यह मनुष्य बलवान् रहे तथापि पराया दास (ताबेदार) रहे ॥ ५ ॥

तमः षष्ठभागे गतं षष्ठभावे भवेन्मातुलान्मा-
नभङ्गो रिपूणाम् ॥ विनाशश्चतुष्पात्सुखं
तुच्छचित्तं शरीरे सदानामयं व्याधिनाशः॥६॥

अर्थ–केतु छठे भावमें हो तो मामासे मानहानि होवे शत्रुनाश हो गौ भैंस आदि पशुसे सुख मिले मन हीन (अल्पसार) रहे और शरीर सर्वदा निरोगी रहे॥ ६ ॥

शिखी सप्तमे भूयसी मार्गचिन्ता निवृत्तः
स्वनाशोऽथ वा वारिभीतिः॥ भवेत्कीटगः
सर्वदा लाभकारी कलत्रादिपीडा व्ययो
व्यग्रता चेत् ॥ ७ ॥

अर्थ--केतु सप्तम भावमें हो तो मार्ग (सफर) संबधी चिंता बहुत रहे संगृहीत धनका नाश होवे अथवा जलसे भय होवे स्त्री आदियोंको पीडा होवे धन व्यय बहुत होवे

मनमें क्रोध भरा रहे यदि केतु सप्तम वृश्चिक राशिका हो तो सर्वदा लाभ देता है ॥ ७ ॥

गुदं पीडयतेऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनादेः स्वद्रव्यस्य रोधः॥भवेदष्टमे राहुपुच्छेऽर्थलाभः सदा कीटकन्याजगो युग्मकेतुः ॥ ८ ॥

अर्थ-केतु अष्टम भावमें हो तो उसकी गुदाअर्श बवासीर भगंदर आदिसे पीडित रहती है वाहन (सवारी) से भय होता है अपना अपने काम न आवे यदि केतु अष्टम वृश्चिक कन्या मिथुन राशियोंमेंसे किसीका हो तो सर्वदा लाभ होवे ॥ ८ ॥

शिखी धर्मभावे यदा क्लेशनाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्यवृद्धिः ॥ सहोत्थव्यथां बाहुरोगं विधत्ते तपोदानतो हास्यवृद्धिं तदानीम् ॥ ९ ॥

अर्थ-केतु नवम भावमें हो तो भाइयोंको व्यथा (पीडा) रहे बाहु (भुजा) ओंमें अपनेभी रोग रहे जो

कुछ जप तप दान धर्म करे उसमें उपहास (ठट्ठा) होवे म्लेच्छादि नीच जातिसे भाग्य (ऐश्वर्य) बढे क्लेश नाश होवे और पुत्रकी इच्छा बहुत रहे ॥ ९ ॥

पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुस्तदा दुर्भगं कष्टभाजं करोति॥तदा वाहने पीडितं जातु जन्म वृषाजालिकन्यासु चच्छत्रुनाशम्॥ १० ॥

अर्थ-जिसका केतु दशम भावमें हो वह दुर्भग (कमवक्त) कुरूप दुःख भोगनेवाला क्लेश सहारनेवाला होताहै कदाचित् वाहन (सवारी) के निमित्त पीडित (दुःखी रहे पिताका सुख न पावे यदि मेष१ वृष२ वृश्चिक ८कन्या६ राशिका हो तो शत्रुनाश करता है॥ १० ॥

सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजोऽपि तस्य ॥ दरे पीडयते संततिर्दुर्भगा च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति॥ ११ ॥

अर्थ-ग्यारहवें भावका केतु समस्त वस्तुमात्रका लाभ करताहै तथा वह मनुष्य अच्छे ऐश्वर्यवान् अधिक

विद्यावाला सुंदरांग (दर्शनीय) तेजवान् प्रतापी अच्छे वस्त्र भूषण पहरनेवाला होता है किंतु उसकी संतती दुर्भगा (भाग्यहीन होती) है तथा डर (भय) से पीडित रहता है ॥ ११ ॥

शिखी रिःफगो बस्तिगुह्यांघ्रिनेत्रे रुजा पीडनं मातुलान्नैव शर्म॥ सदा राजतुल्यं नरं सद्व्ययं तद्रिपूणां विनाशं रणेऽसौ करोति ॥ १२ ॥

अर्थ—केतु बारहवें भावमें हो तो उस मनुष्यको राजाओंके तुल्य सुख भोगनेवाला करता है अच्छे मार्गमें धनव्यय करता है बस्ति (नाभी) के नीचे गुह्य (लिंग) अंघ्रि (पैर) और नेत्रोंमें रोग रहते हैं मामाके पक्षसे सुख नही मिलता ॥ १२ ॥

चमत्कारचिन्तामणौ यत्खगानां फलं कीर्तितं भट्टनारायणेन ॥ पठेद्यो द्विजस्तस्य राज्ञां समक्षे प्रवक्तुं न चान्ये समर्थाः समर्थाः ॥

अर्थ—यह चमत्कारचिन्तामणिनामक ग्रंथ नारायण भट्टने लोकोपकारार्थ बनाया इसमें जो ग्रहोंके भावफल

हैं इन्होंको जो द्विज (ब्राह्मण) आदि ३ वर्णमेंसे पढे वह राजाओंके सभामें चमत्कार फल कहनेमें चतुर होवे अन्य समर्थी उसके आगे कहनेको समर्थ नहीं होते ॥

यथाबुद्धि टीका महीशर्मणा श्रीचमत्कारचिन्तामणे-र्लोकवाण्या । महाश्रेष्ठिनोऽनुज्ञया चापलं मे क्षमध्वं बुधा बोधिनी बालकानाम् ॥

श्रीचमत्कारचिंतामणि नामक ग्रंथकी बालकोंको बोध करनेवाली टीका सरल देशभाषामें सेठ गंगाविष्णुजीकी आज्ञानुसार महीधरशर्माने यथामति रची इसमें जो कुछ चापल हो उसे विद्वज्जन क्षमा करें ॥ १ ॥

इति महीधरविरचितचमत्कारचिन्तामणि भाषाटीका समाप्त

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तकें मिलने के स्थान :–

१. खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
खेतवाड़ी
बम्बई–४०० ००४

२. गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्या बाई चौक, कल्याण,
(जि० ठाणे–महाराष्ट्र)

३. खेमराज श्रीकृष्णदास, चौक–वाराणसी (उ. प्र.)
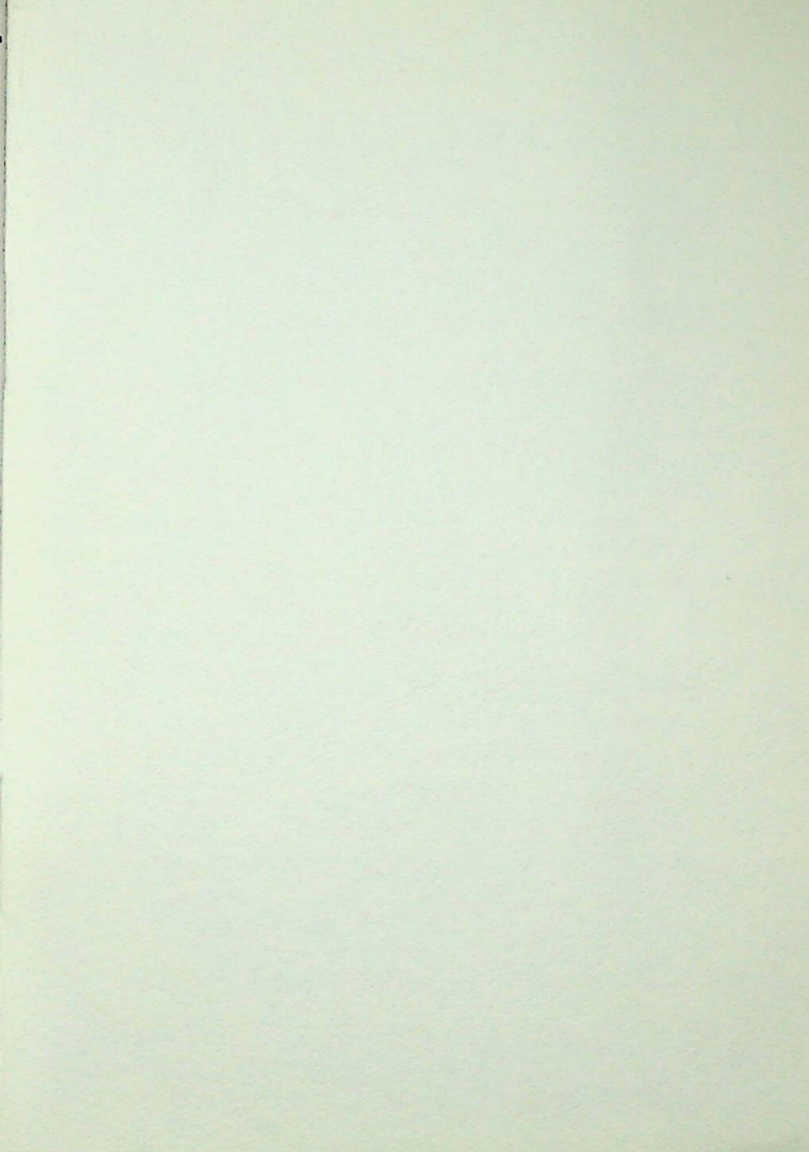
हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बँक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र) २२१ ००१
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.